जून 2025 ₹ 20

समाजवादी बुलेटिन

भाजपा सरकार चौतरफा हाहाकार

R.N.I. No. 68832/97

सरकारों को वायदा सोच-समझ कर करना चाहिए और जो भी वायदा किया जाए, उसे पूरा जरूर करना चाहिए। समाजवादी सरकारों में जो भी वायदे किए गए, सब पूरे हुए क्योंकि समाजवादी पार्टी की कथनी और करनी में कोई भेद नहीं। सपा की सरकारों में विकास के ऐतिहासिक कार्य हुए जिनकी दुनिया भर में सराहना होती है। यही कारण है कि समाजवादी पार्टी से जनता को हमेशा उम्मीदें रहती हैं।

मुलायम सिंह यादव
संस्थापक, समाजवादी पार्टी

समाजवादी बुलेटिन

जून 2025

वर्ष 26 | संख्या 08

अंदर

सेना की बहादुरी पर देश को गर्व: अखिलेश 30

08 कवर स्टोरी

भाजपा सरकार चौतरफा हाहाकार

अखिलेश के लिए बढ़ता जा रहा है जनसमर्थन 24

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव को उत्तर प्रदेश के जिलों के दौरों के दौरान मिल रहा भरपूर समर्थन यह स्पष्ट संकेत दे रहा है कि आमजन को श्री अखिलेश यादव से काफी उम्मीदें हैं। यह उम्मीदें 2027 में समाजवादी सरकार बनने पर ही पूरी होंगी, इस भरोसे से आमजन श्री अखिलेश यादव के पक्ष में पूरी तरह आ गए हैं और उन्हें इंतजार है 2027 के चुनाव का ताकि वे श्री अखिलेश यादव की ताजपोशी कर सकें।

सच्चे लोकतंत्र के लिए जरूरी है समाजवाद 34

सपा ही कर रही पीड़ितों की मदद 32

PDA काव्य विचार

भ्रष्टाचार की रेल है
नौकरी देने में फेल है।
अपराधियों से मेल है
बेगुनाहों को जेल है।
भाजपा का यही खेल है
2027 की पूरी तैयारी है।
अब PDA की बारी है॥

प्रिय पाठकों,

PDA काव्य विचार के लिए आपकी स्वरचित लघु कविता का स्वागत है। केवल उन्हीं लघु कविताओं पर विचार किया जाएगा जो PDA केन्द्रित, सुस्पष्ट, मौलिक, न्यूनतम 4 से 6 लाइनों में टाइपशुदा होंगी। अपनी लघु कविता ईमेल teamsbeditorial@gmail.com पर अपने नाम और पते के साथ भेजें।

प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक

प्रोफेसर रामगोपाल यादव

☎ 0522 - 2235454

samajwadibulletin19@gmail.com

bulletinsamajwadi@gmail.com

Mob:- 9598909095

/samajwadiparty

समाजवादी पार्टी के लिए

19, विक्रमादित्य मार्ग, लखनऊ से प्रकाशित

अवध पब्लिशिंग हाउस, 8 पान दरीबा, लखनऊ से मुद्रित

R.N.I. No. 68832/97

आपातकाल के पांच दशक बाद संविधान और लोकतंत्र का सबक

बुलेटिन ब्यूरो

मुंबई के यूसुफ मेहर अली सेंटर में 6 अप्रैल 2025 को '1974' पुस्तक का विमोचन महात्मा गांधी के प्रपौत्र श्री तुषार गांधी एवं श्री जयप्रकाश नारायण के साथ रहे वरिष्ठ पत्रकार श्री श्रवण गर्ग ने किया था। इस आयोजन में 1942 आन्दोलन के सौ साल पूरा कर चुके स्वतंत्रता संग्राम सेनानी जी.जी. पारिख को यह पुस्तक भेंट की गई। पुस्तक का संपादन श्री अम्बरीष कुमार और श्री अरुण कुमार त्रिपाठी ने संयुक्त रूप से किया है। यह पुस्तक वाणी प्रकाशन से प्रकाशित हुई है।

राजनीति में रुचि रखने वाले पाठकों, राजनीतिक कार्यकर्ताओं सहित जागरूक समाज के लोगों के लिए एक दस्तावेज है जिससे आपातकाल के पूर्व लोकतंत्र की मजबूती के लिए हुए आन्दोलन एवं संघर्ष की पृष्ठभूमि से '1974' पुस्तक के माध्यम से परिचित हुआ जा सकता है। वर्तमान दौर के भारतीय लोकतंत्र विशेषकर उत्तर प्रदेश में समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव का होना महत्वपूर्ण है जिनके नेतृत्व में समाजवादी लोग संविधान बचाने का अभियान मजबूती से चला रहे हैं।

बीते वर्ष संपन्न हुए लोकसभा चुनाव में श्री अखिलेश यादव की बाबा साहेब के संविधान बचाने के अभियान और मुखर बयानों का यूपी के जनमानस पर ऐसा असर हुआ कि समाजवादी पार्टी सांसदों की संख्या के हिसाब से देश की तीसरी सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरी। समाजवादी विचारधारा एवं नागरिक अधिकार श्री अखिलेश यादव की प्राथमिकता में शामिल हैं। बीते वर्ष राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के साथ 1942 भारत छोड़ो आंदोलन में सक्रिय रहने वाले वयोवृद्ध जी.जी. पारिख के जन्म शताब्दी दिवस पर श्री अखिलेश यादव ने विशेष शुभकामना संदेश प्रेषित किया था। इसी क्रम में उन्होंने कहा कि हाल ही में प्रकाशित पुस्तक '1974' व्यवस्था परिवर्तन का आंदोलन और जेपी समाजवादी आंदोलन की विरासत है।

श्री अखिलेश यादव ने अपने मुख्यमंत्रित्वकाल में राजधानी लखनऊ में भव्य स्मारक "जेपी एनआईसी" बनवाया था। इसमें अंतर्राष्ट्रीय स्तर की सुविधाओं के साथ लोकतंत्र के दूसरे संघर्ष की पूरी कहानी भी चित्रित की जानी थी। भाजपा सरकार को इस स्मारक से इतनी चिढ़ हुई कि उसने लोकनायक जयप्रकाश नारायण की जयंती पर गतवर्ष जेपी एनआईसी पर ताला डलवा दिया था। भाजपा सरकार ने जेपी की जयंती के अवसर पर श्री अखिलेश यादव को जयप्रकाश नारायण इंटरनेशनल सेंटर स्थित उनकी प्रतिमा पर माल्यार्पण करने से रोक दिया था। अंततः श्री अखिलेश यादव ने सरकारी रोक के बावजूद जेपी एनआईसी का गेट फांदकर जेपी के सम्मान में उनकी मूर्ति पर माल्यार्पण कर साबित कर दिया था

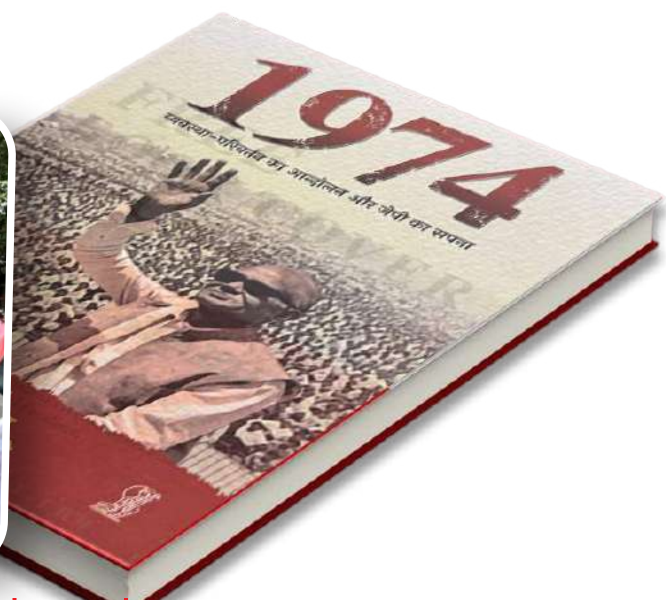

इमरजेंसी में प्रतिरोध पत्रिका

गाजियाबाद के रामलीला मैदान में २३ फरवरी १६७५ को लोकनायक श्री जयप्रकाश नारायण की उपस्थिति में विराट जनसभा को श्री राजेन्द्र चौधरी सम्बोधित करते हुए ।

राजेन्द्र चौधरी

सत्तर का दशक संविधान प्रदत्त अधिकारों के हनन का था जिसके खिलाफ छात्रों-नौजवानों ने जेपी की अगुवाई में लोकतंत्र बहाली के सपने को साकार करने का संघर्ष किया। आज की चुनौती बड़ी है। तब भी नागरिकों के अधिकार छीन लिए गए थे आज भी नागरिक अधिकारों को समाप्त करने का षडयन्त्रकारी प्रयास जारी है। संविधान संकट में है, भारत की विविधता पर खतरा मंडरा रहा है।

आज से पचास साल पहले 1975 में जब देश में आपातकाल लगा था तब संविधान प्रदत्त नागरिक स्वतंत्रता और अभिव्यक्ति के मौलिक अधिकार का हनन हुआ था। आपातकाल लगते ही विपक्ष के नेताओं को कैद कर लिया गया था। अखबारों पर भी सेंसरशिप लगा दी गई। चारों ओर दहशत और आतंक का माहौल था, न अपील न वकील, न दलील। जेल में यातनाओं का दौर। आज भी उस दिन की याद कर मन में सिहरन उत्पन्न हो जाती है। आपातकाल लगने के कुछ घंटे पहले लोकनायक जय प्रकाश नारायण की दिल्ली के रामलीला मैदान की सभा में मैं अपने सहयोगियों के साथ शामिल हुआ था। उस समय के हालात क्या थे आज की पीढ़ी का बड़ा हिस्सा नहीं जानता है।

इमरजेंसी लगने के बाद अनेक अन्डरग्राउन्ड पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन चोरी छिपे हो रहा था जिनमें जनवाणी, प्रतिरोध, युवा संघर्ष और रेजिसटेन्स प्रमुख पत्र/पत्रिकाएं थीं। उस समय मैं भारतीय लोक दल के युवा संगठन का राष्ट्रीय महासचिव था। उसी दौर में मैंने अपने साथियों के साथ प्रतिरोध पत्रिका का प्रकाशन किया। इसका विवरण ऑपरेशन इमरजेंसी नामक पुस्तक में भी दिया गया है। प्रतिरोध के कुछ अंश निकलने के बाद इस पर प्रतिबंध लगा दिया गया और

पुलिस ने इसके अंक जब्त कर लिए।

हम लोग प्रतिरोध की कापियां छपवाकर एक ऑटो से राष्ट्रपति भवन चौराहा पर पहुंचे तभी प्रधानमंत्री इन्दिरा गांधी का काफिला उधर से गुज़रा। हम लोगों को लगा कि गिरफ्तारी तय है क्योंकि पुलिस चप्पे-चप्पे पर थी और हर एक को देख रही थी। कुछ वाहन चेक भी किए गए। मैं और केसी त्यागी आटो में थे। प्रतिरोध पत्रिका का बंडल साथ था। इस इलाके में वैसे भी कड़ी सुरक्षा रहती थी। वह तो गनीमत थी कि पुलिस ने चेक नहीं कियां अन्यथा जो प्रताड़ना मिलती उसके बाद आज हम यह कहानी बता पाते कहना मुश्किल ही था। ऐसे खतरनाक दिन थे वे।

हम किस तरह इमरजेंसी में प्रतिरोध का प्रकाशन कर रहे थे यह भी बहुत मशक्कत का काम था। पत्रिका को राजनैतिक लोगों तक पहुंचाना एक अलग समस्या थी। दिल्ली में तब कनॉट प्लेस स्थित काफी हाउस भी हमारा एक अड्डा था। यहां सतपाल मलिक, रमाशंकर सिंह, सुधीर गोयल, राजकुमार जैन से लेकर केसी त्यागी आदि होते थे। वह बैठते और एक दूसरे को गोपनीय तरीके से पत्रिका झोले से निकालकर दे देते। फिर भी गिरफ्तारी की आशंका बनी रहती। उस दौर में काफी हाउस में समाजवादियों और वामपंथियों के अलग-अलग खेमों का अड्डा जमता था। काफी हाउस से लगी थियेटर कम्युनिकेशन की बिल्डिंग थी जिसमें चंद्रशेखर की यंग इण्डियन पत्रिका निकलती थी। खैर हम प्रतिरोध पत्रिका को दिल्ली हरियाणा और पश्चिमी उत्तर प्रदेश के कुछ हिस्सों तक पहुंचाते थे। यह करोल बाग से कुछ दूर पिंजरापोल सोसाइटी में स्थित बाबू लाल दोषी की प्रेस से प्रकाशित होती थी। बाबू लाल दोषी भी क्रान्तिकारी धारा के समर्थक थे और वे अपनी भूमिगत पत्रिका को प्रकाशित करते थे। बाद में उनकी प्रेस पर भी छापा पड़ गया।

मैं आपातकाल के विरोध में एक दर्जन साथियों के साथ गाजियाबाद में प्रदर्शन कर रहा था। तब पुलिस ने हथकड़ी लगाकर गिरफ्तार कर मेरठ जेल भेज दिया। हालांकि तब मैं एमए एलएल बी कर चुका था और 1974 में गाजियाबाद विधान सभा क्षेत्र से चुनाव लड़ चुका था। चौधरी चरण सिंह जी ने हमें टिकट दिया था। 1977 में इमरजेंसी के बाद मैं वहीं से चुनाव जीतकर विधान सभा पहुंचा। तब मेरी पहचान एक छात्र युवा नेता के रूप में थी।

समाजवादी शुरू से ही अन्याय के विरुद्ध संघर्षरत रहते हैं। लोकतंत्र, समाजवाद और नागरिक अधिकारों की सुरक्षा के लिए वह प्रतिबद्ध हैं। अगस्त क्रान्ति में भी समाजवादियों ने अग्रणी भूमिका निभाई थी। जब आपातकाल लगा तो जयप्रकाश नारायण, मोराजी देसाई, चौधरी चरण सिंह, चंद्रशेखर, मधु लिमए और राजनारायण को रातों रात गिरफ्तार कर लिया गया था। तमाम नेताओं को जेल यातना सहनी पड़ी थी।

(इमरजेंसी में 'प्रतिरोध पत्रिका' शीर्षक के अंतर्गत लेख में लोकतंत्र रक्षक सेनानी, यूपी के पूर्व कैबिनेट मंत्री राजेन्द्र चौधरी ने आपातकाल के पूर्व और उस दौरान के घटनाक्रम एवं अनुभवों का सिलसिलेवार ढंग से वर्णन किया है)

कि उनकी प्राथमिकता में जेपी से बढ़कर और कोई नहीं है।

अपनी विरासत को सहेजकर भविष्य के समाज निर्माण की चुनौतियों के लिए सचेत होकर सक्रिय रहना ही राजनैतिक कार्यकर्ताओं का मूल कर्तव्य है जिसमें समाजवादी आंदोलन की यात्रा एक प्रकाश की भांति हमारे सामने स्थापित है।

'1974' व्यवस्था-परिवर्तन का आंदोलन और जेपी का सपना पुस्तक में जेपी के दो महत्वपूर्ण इंटरव्यू हैं। पुस्तक की विषयवस्तु तीन भाग में समाहित है जिनमे पहला भाग भूमिका, 'चौहत्तर आंदोलन और जेपी' दूसरा भाग 'आंदोलन से निकले संगठन और अन्य आंदोलन' और तीसरा भाग 'संघर्ष के विविध आयाम' शामिल हैं। इसी पुस्तक में राजेन्द्र चौधरी के लेख में आपातकाल के दिनों की भयावह यात्रा का वर्णन भी है जिसमें प्रतिरोध पत्रिका का प्रकाशन और मेरठ जेल की यात्रा का उल्लेख है।

भाजपा सरकार चौतरफा हाहाकार

बुलेटिन ब्यूरो

उत्तर प्रदेश में बीते 8 साल से चल रही भाजपा सरकार में जनता के बीच हाहाकार मचा है। रोजाना कई तरीके से जुमलेबाजी की सरकार चला रही सत्तारूढ़ भारतीय जनता पार्टी आम लोगों को बिगड़ी कानून व्यवस्था विशेषकर महिला सुरक्षा, बेरोजगारी, भीषण भ्रष्टाचार, चरमरा चुकी स्वास्थ्य सुविधाओं में सुधार का काम गंभीरता से करने की जगह जीरो टॉलरेंस का बेसुरा राग, जो कि जमीनीहकीकत से कोसों दूर है, अलापने में ही अपना पूरा वक्त ज़ाया कर रही है।

वहीं, जैसे-जैसे PDA की चेतना बढ़ रही है, वैसे-वैसे पीडीए के प्रेरणास्रोत प्रतीकों व महापुरुषों पर और साथ ही पीडीए समाज पर वर्चस्ववादियों के शारीरिक-मानसिक प्रहार भी बढ़ रहे हैं। ऐसे सुनियोजित अपमान करके जिनको लग रहा है कि पीडीए का मनोबल टूटेगा वे ऐतिहासिक भूल कर रहे हैं क्योंकि प्रताड़ना का प्रतिकार शक्ति बन कर उभरता है। उत्पीड़न की भी एक सीमा होती है और उत्पीड़क की भी। अब भाजपा वह सीमा लांघ चुकी है और अपने पतन को देखते हुए, कुत्सित-कृत्यों से पीडीए की हिम्मत और एकजुटता को तोड़ने का अंतिम प्रयास कर रही है जिसमें अब वह कभी सफल नहीं होगी क्योंकि समाज का हर वर्ग समझ गया है कि भाजपा सरकार को विकास और तरक्की से कोई मतलब नहीं है। यह जुमलाबाजों की सरकार है। भाजपा सरकार में अन्याय, अत्याचार, अराजकता चरम पर है। भ्रष्टाचार और लूट चरम पर है। भाजपा सरकार ने आठ साल के कार्यकाल में विकास का कोई कार्य नहीं किया। इतने वर्षो की सरकार के बाद भी केंद्रऔर प्रदेशकी भाजपा सरकार के लोग समाजवादी सरकार में हुए विकास कार्यों का ही फीता काट रहे हैं। इसका ताजा वाकया हाल ही में कानपुर में दिखा जहां प्रधानमंत्री जी ने जिन विकास

परियोजनाओं का उद्घाटन किया, वे समाजवादी सरकार के समय के शुरू हुए काम हैं। समाजवादी सरकार का हर काम, जनता के नाम है। पनकी तापीय विस्तार योजना, नेवेली लिग्नाइट पावर प्लांट, कानपुर मेट्रो की नींव समाजवादी सरकार में रखी गई थी, अब भाजपा के लोग उन्हीं परियोजनाओं को अपनी उपलब्धि बतारहे हैं।

जिस लखनऊ और नोएडा की मेट्रो का उद्घाटन प्रधानमंत्री जी से कराया गया उसे भी समाजवादी सरकार ने बनाया था। समाजवादी सरकार में हुए विकास कार्य विश्वस्तरीय और जनता के हित में हैं। आगरा लखनऊ एक्सप्रेसवे, लखनऊ में इकाना अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट स्टेडियम, आई टी सिटी, जनेश्वर मिश्र पार्क इसके उदाहरण हैं। भाजपा सरकार में शुरू हुई ज्यादातर योजनाएं भ्रष्टाचार की शिकार हैं। भाजपा सरकार में शुरू हुआ जल जीवन मिशन तो लूट का मिशन बन गया है।

भाजपा सरकार ने भ्रष्टाचार के सारे रिकॉर्ड तोड़ दिए हैं। इस सरकार में हर कार्य और हर विभाग में भ्रष्टाचार है। लूट और बेईमानी चरम पर है। भाजपा की बेईमानी के बोझ तले 'अप्रैल' में लखीमपुर में टंकी फटी, अब 'मई' में सीतापुर में टंकी फट गई। लगता है जून में कहीं और भाजपा की तथाकथित ईमानदारी का डंका फटेगा।

ये तो शुक्र रहा कि जो लोग जल जीवन मिशन की जांच करने निकले थे, वे भरभरा के ज़मींदोज़ हो गयी इस टंकी के आसपास नहीं थे। भाजपा ने तो जल से छल करके भ्रष्टाचार की हर हद को पार कर दिया है। पानी की टंकियां भाजपा के भ्रष्टाचार का भार सह नहीं पा रही हैं। उत्तर प्रदेश में ऐसी लूट और भ्रष्टाचार कभी नहीं था जो आज भाजपा की सरकार में चल रहा है।

प्रदेश की कानून व्यवस्था ध्वस्त हो चुकी है। अपराध की घटनाएं लगातार बढ़ती जा रही हैं। अपराध नियंत्रण के भाजपा सरकार के सभी दावे झूठे साबित हो रहे हैं। कानून व्यवस्था और अपराध को लेकर भाजपा सरकार का जीरो टॉलरेंस का दावा जीरो हो चुका है। महिलाओं के साथ हत्या, लूट, बलात्कार की घटनाएं लगातार बढ़ती जा रही हैं। भाजपा सरकार की नाकामी से महिला अपराध में उत्तर प्रदेश नंबर वन प्रदेश बन गया है।

दरअसल भाजपा सरकार में उत्तर प्रदेश में कोई भी सुरक्षित नहीं है। गरीबों के साथ अन्याय, अत्याचार की घटनाएं भी लगातार बढ़ती जा रही है। किसी को न्याय नहीं मिल रहा है। धरातल पर कोई कार्य नहीं हो रहा है। सरकार के पास आश्वासन के अलावा कुछ नहीं। झूठ, लूट और भ्रष्टाचार भाजपा सरकार की पहचान बन चुकी है। भाजपा सरकार हर मोर्चे पर विफल है। पुलिस हिरासत में सबसे ज्यादा मौतें भाजपा सरकार में हो रही हैं। भाजपा सरकार जनता का भरोसा खो चुकी है। जनहित में काम करने के बजाय भाजपा सरकार निर्दोषों का उत्पीड़न कर रही है। पीड़ित असहाय जनता 2027 के विधानसभा चुनाव में भाजपा को सत्ता से हटाने के लिए संकल्पित है।

उत्तर प्रदेश में अराजकता और अत्याचार

बुलेटिन ब्यूरो

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव ने भाजपा सरकार में उत्तर प्रदेश में हर मोर्चे पर बढ़ती जा रही अराजकता पर तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त की है। सपा मुखिया ने कहा कि भाजपा सरकार ने उत्तर प्रदेश को अराजकता और अत्याचार के दलदल में फंसा दिया है।

श्री अखिलेश यादव ने कहा है कि अपराध पर जीरो टॉलरेंस नीति का डंका पीटने वाली भाजपा अपराधियों को संरक्षण देने और अपने विरोध की हर आवाज को दबाने के लिए उनका उत्पीड़न करने का काम पूरी ईमानदारी से कर रही है। भाजपा सरकार में लोकतंत्र कमजोर हुआ है, असहिष्णुता और नफरत को खुली छूट मिली हुई है और भ्रष्टाचार फल-फूल रहा है। सत्ता के नशे में भाजपा मर्यादा के सभी मूल्य भुला चुकी है। इसके पदाधिकारियों और नेताओं द्वारा खुले आम कानून की धज्जियां उड़ाई जा रही हैं। इतना ही नहीं अश्लीलता की हद पार करते हुए उनके वीडियो वायरल हुए हैं। भाजपाई नेताओं और उनके परिजनों के कुकृत्य की वीडियों क्लिपें निहायत शर्मनाक है। कोई भाजपा नेता सेक्स रैकेट चलाता मिलता है तो कोई सरेराह दुष्कर्म में लिप्त मिल रहा है। भाजपा के कई प्रवक्ता भाषा और संस्कार की मर्यादा को धूल धूसरित करते हुए विपक्षी प्रवक्ताओं को अपमानित कर रहे हैं, उन पर कोई रोक नहीं लगती है।

सपा मुखिया ने कहा कि सत्ता संरक्षित स्वजातीय गुंडे अराजकता फैलाने से बाज नहीं आ रहे हैं। ये कौन से संस्कार हैं जो सामने आ रहे हैं। दरअसल यही भाजपा का असली चाल, चरित्र और चेहरा है जिसे भाजपा धर्म और राष्ट्रवाद के दावों के बीच छुपाती है जबकि भाजपाइयों का असली चरित्र ही भ्रष्टाचारी है।

उन्होंने कहा कि जनता में भाजपा के खिलाफ आक्रोश का उबाल है। उत्तर प्रदेश में लोकसभा की पराजय के बाद भाजपा का सारा सियासी समीकरण और साम्प्रदायिक राजनीति का फार्मूला फेल हो चुका है। भाजपा सरकार में सरेआम अवैध कांड हो रहे हैं इसके पीछे भाजपा नेताओं एवं प्रशासनिक अमले की सांठगांठ और मिलीभगत होती है। नदियों की छाती चीरकर रेत निकाली जा रही है। उन्होंने कहा कि भाजपा में भूमाफिया खुलेआम गरीबों की जमीनों पर कब्जा कर रहे हैं। पहाड़ काटे जा रहे हैं। सड़कें बनने के साथ ही उखड़ने लगती हैं। बांदा में जल जीवन मिशन के तहत एक करोड़ रूपए की लागत से बनी पानी की टंकी टेस्टिंग में फेल। कई जिलों में टंकिया फट गईं। खनन अब उद्योग नहीं भाजपा सरकार में लूट का धंधा बन गया है।

उन्होंने कहा कि युवाओं के लिए नौकरी और रोजगार भाजपा सरकार के एजेंडे में नहीं है। जिस तरह से नौकरियों के बारे में की गयी सोशल मीडिया पोस्ट डिलीट कर दी गयी है, वैसे ही नौकरियां भी उत्तर प्रदेश से डिलीट कर दी गयीं हैं। प्रदेश सरकार का 1,93,000 शिक्षक भर्तियों के जुमलाई विज्ञापन से जन्मा आक्रोश 2027 के विधानसभा चुनाव में भाजपा की हार का राजनीतिक गणित है।

उन्होंने कहा कि मान लिया जाए कि एक पद के लिए कम से कम 75 अभ्यर्थी होते तो यह संख्या होती है 1,44,75,000 और एक अभ्यर्थी के साथ यदि केवल उनके अभिभावक जोड़ लिए जाएं तो कुल मिलाकर 3 लोग इससे प्रभावित होंगे अर्थात ये संख्या बैठेगी 4,34,25,000।

ये सभी व्यस्क होंगे अतः इन्हें 4,34,25,000 मतदाता मानकर अगर उत्तर प्रदेश की 403 विधानसभा सीटों से विभाजित कर दें तो ये आंकड़ा लगभग 1,08,000 वोट प्रति सीट का आयेगा और अगर इनका आधा भी भाजपा का वोटर मान लें चूंकि भाजपा 50 फीसदी वोटर्स की जुमलाई बात करती आई है, तो लगभग 1,08,000 का आधा मतलब हर सीट पर 54,000 मतों का नुकसान भाजपा को होना तय है। भाजपा 2027 के विधानसभा चुनावों में दहाई सीटों पर ही सिमट जाएगी।

श्री अखिलेश यादव ने कहा कि पुलिस भर्ती के मामले में भर्तियों का ये गणित भाजपा को उत्तर प्रदेश में लगभग आधी सीटों पर हराने में सफल भी रहा है, ऐसे आंकड़ों को अब सब गंभीरता से लेने लगे हैं। अब ये मानसिक दबाव का नहीं वरन सियासी सच्चाई का आंकड़ा बन चुका है। उन्होंने कहा कि जैसे ही ये आंकड़ा प्रकाशित होगा और विधानसभा चुनाव लड़ने वाले भाजपाई प्रत्याशियों के बीच जाएगा वैसे ही उनका राजनीतिक गुणा-गणित टूट कर बिखर जाएगा और विधायक बनने का उनका सपना भी।

श्री अखिलेश यादव ने कहा कि इससे भाजपा में एक तरह से भगदड़ मच जाएगी। ऐसे में भाजपा को मतदाता ही नहीं बल्कि प्रत्याशियों के भी लाले पड़ जाएंगे। भाजपा सरकार के विरोध में प्रदेश की जनता पूरी तरह आक्रोशित है। उन्होंने कहा कि भाजपा की सामाजिक अन्याय, भ्रष्टाचार, साम्प्रदायिकता पर आधारित समाज को लड़ाने वाली बेहद कमज़ोर हो चुकी दरारवादी, विभाजनवादी नकारात्मक राजनीति के मुकाबले सामाजिक न्याय के राज की स्थापना का महालक्ष्य लेकर चलने वाली समता-समानतावादी, सौहार्दपूर्ण और सकारात्मक पीडीए राजनीति का युग आ चुका है। 90 फीसदी पीड़ित जनता जाग चुकी है और अपनी पीडीए सरकार बनाने के लिए कटिबद्ध भी है और प्रतिबद्ध भी। अब सब पीड़ित मिलकर देंगे जवाब, 2027 में बनाएंगे अपनी पीडीए सरकार।

यूपी में जंगलराज

बुलेटिन ब्यूरो

भाजपा सरकार में उत्तर प्रदेश की कानून व्यवस्था पूरी तरह ठप हो चुकी है। रोजाना हत्याएं हो रही हैं और अपराधियों के हौसले इतने बुलंद हैं कि वे दिनदहाड़े हत्याकांडों को अंजाम दे रहे हैं। हालात कितने बिगड़ चुके हैं इसका एक उदाहरण हाल में तब देखने को मिला जब प्रदेश में 24 घंटेमें 14 हत्याएं कर अपराधियों ने पुलिस को खुली चुनौती दी। इन भयावह परिस्थितियों से बेखबर सत्ता के शीर्ष पर बैठे संविधान रक्षा के प्रतिनिधि राज्य में जंगलराज की स्थिति को सुधारने की जगह सब चंगा है वाली मानसिकता के साथ हकीकत से आंखें मूंदे बैठे आत्ममुग्धता के भावों से सराबोर हैं। जबकि प्रदेश की कानून व्यवस्था पूरी तरह ध्वस्त हो गयी है। अपराधी खुले आम गोलियां चला रहे हैं।

हत्याएं कर रहे हैं। अपराधियों को कानून का डर नहीं रह गया है। भाजपा सरकार की गलत नीतियों से उत्तर प्रदेश अपराध प्रदेश बन गया है। कानून-व्यवस्था पर भाजपा सरकार का जीरो टालरेंस का दावा जीरो हो चुका है। भाजपा सरकार में राजधानी लखनऊ तक में लोग सुरक्षित नहीं हैं। लखनऊ में दिन दहाड़े गोलियां चल रही हैं। गैंगवार हो रहे हैं। राजधानी लखनऊ के सर्वोदय नगर में सड़क पर दौड़ा कर गोली मारी गयी। लखनऊ के ही पारा में पापर्टी डीलर के दफ्तर में दबंगों ने लाठी-डंडों से हमलाकर पिटाई की।

लखनऊ के ही मलिहाबाद में घर पर कब्जा करने का विरोध करने पर महिला पर हमला हुआ। जौनपुर के जाफराबाद में पिता और दो बेटों की धारदार हथियार से बेरहमी से हत्या कर दी गयी। नोएडा में सिपाही सौरभ देशवाल की दबिश के दौरान बदमाशों ने फायरिंग कर हत्या कर दी।

सहारनपुर में छेड़छाड़ से परेशान दसवीं की छात्रा ने जान दे दी। पूरब से पश्चिम तक पूरे प्रदेश में अपराधों की बाढ़ आयी हुई है। सरकार से कानून व्यवस्था नहीं संभल रही है। हत्या, लूट, छेड़छाड़ की घटनाएं लगातार बढ़ती जा रही है। जनता भाजपा सरकार और मुख्यमंत्री जी के जुमलों को सुन-सुनकर थक चुकी है। कानून व्यवस्था बनाए रखने के प्रति यूपी की भाजपा सरकार की गंभीरता का आलम यह है कि वह उत्तर प्रदेश में एक स्थायी डीजीपी कीतैनाती तक नहीं कर सकती है तो वह कानून व्यवस्था क्या संभालेगी। डीजीपी के पद पर लगातार कार्यवाहक की व्यवस्था के अंतर्गत ही काम हो रहा है

भाजपा सरकार में चारों तरफ अराजकता ही अराजकता है। भाजपा राज में महिलाएं, बच्चियां आए दिन अपमानित होती ही रहती हैं। अभी दो दिन पहले अपनी इज्जत बचाने के लिए एक बच्ची को ऑटो से कूदना पड़ा। वह बुरी तरह घायल हो गयी। कई छात्राओं द्वारा छेड़खानी से तंग आकर फांसी लगा लेने

आधी आबादी सर्वाधिक असुरक्षित

फोटो स्रोत : गूगल

बुलेटिन ब्यूरो

उत्तर प्रदेश की भाजपा सरकार में महिलाएं सबसे ज्यादा असुरक्षित हैं। महिलाओं के साथ अपराध की घटनाएं थमने का नाम नहीं ले रही है। प्रदेश में कानून व्यवस्था ध्वस्त है। भाजपा सरकार का अपराध को लेकर जीरो टॉलरेंस का दावा जीरो साबित हो चुका है।

इस सरकार में महिलाओं के अपराध के मामले में उत्तर प्रदेश देश में सबसे ऊपर है। प्रदेश में हर दिन ऐसी ही दर्जनों घटनाएं हो रही हैं। भाजपा सरकार ने प्रदेश की कानून व्यवस्था को बर्बाद कर दिया है। महिलाओं, बच्चियों के साथ हो रही घटनाओं के कारण लोगों में डर का माहौल है। महिलाओं, बेटियों के लिए उत्तर प्रदेश में सुरक्षित माहौल नहीं रह गया।

पिछले दिनों मेरठ में चलती कार में दो किशोरियों के साथ गैंगरेप हुआ। इसी तरह इकौना थाना क्षेत्र में तिलक में जा रही बालिका का अपहरण हो गया।

पिछले दिनों मुरादाबाद में किशोरी के साथ सामूहिक दुष्कर्म की घटना हुई। मेरठ में नर्स से दुष्कर्म का प्रयास हुआ। फर्रुखाबाद में घर में सो रही बुजुर्ग महिला की हत्या हो गई। बिल्हौर कानपुर नगर के चौबेपुर में एक की हत्या हुई। यह घटनाएं तो सिर्फ उदाहरण मात्र हैं। उत्तर प्रदेश में दबंगों और अपराधियों के बढ़ते आतंक और खराब होती कानून व्यवस्था के लिए भाजपा सरकार जिम्मेदार है। भाजपा सरकार जनता से झूठे वादे करने के अलावा कुछ नहीं करती है। समाजवादी सरकार ने महिला सुरक्षा के लिए 1090 और पुलिस सेवा के लिए डायल 100 सेवा शुरू की थी लेकिन भाजपा सरकार ने सब बर्बाद कर दिया। भाजपा की कथनी करनी में बहुत अंतर है।

भाजपा की सरकार बनने पर मुख्यमंत्री जी का रोमियो स्क्वाड जैसे बना था वैसे ही हवा में उड़ गया। बच्चियों के साथ दरंदिगी की घटनाएं आए दिन अखबारी सुर्खियां बनती हैं। सत्ता संरक्षित अपराधियों पर कार्रवाई नहीं होती है। कार्रवाई में भी जाति-धर्म का भेदभाव किया जाता है। इतनी बदनामी उत्तर प्रदेश की कभी नहीं हुई। 2027 में प्रदेश की जनता ने तय कर लिया है वह इस झूठी सरकार को सत्ता से हटाकर विकास और सुरक्षा के लिए प्रतिबद्ध समाजवादी सरकार लाएगी।

की दुर्भाग्यपूर्ण घटनाएं भी लगातार हो रही हैं।

इस सरकार में वंचित समाज केप्रति विद्वेष के भाव भी निरंतर बढ़ते गए हैं। लखीमपुर खीरी में बाबा साहब की प्रतिमा स्थापना को लेकर दबंगों ने रोड़े अटकाए और पीडीए को अपमानित करने का प्रयास किया। भाजपा सरकार और शासन-प्रशासन दबंगों के साथ खड़ा दिखा।

आगरा के एक अस्पताल में महात्मा बुद्ध और बाबा साहेब डॉ. भीमराव अंबेडकर जी की चित्रित टाइल्स को फर्श पर लगानेजैसाअपमानजनक कुकृत्य भी भाजपा केशासन में ही हुआ। कभी बाबा साहेब निर्मित संविधान बदलने की साज़िश, कभी उनकी मूर्ति लगाने का विरोध और कभी टाइल्स पर उनका चित्रण एक सोची-समझी चाल है, जिसके पीछे प्रभुत्ववादियों का कौन सा गुट काम कर रहा है कहने की आवश्यकता नहीं है। भाजपा सरकार में सभी अवैध काम सरेआम सत्ता की सांठ-गांठ और मिलीभगत से हो रहे हैं। प्रदेश की जनता 2027 में भाजपा को सत्ता से हटाकर जंगलराज काअंत कर देगी।

सरकारी दावों से बेजार
यूपी के बेरोजगार

फोटो स्रोत : गूगल

बुलेटिन ब्यूरो

उत्तर प्रदेश की भाजपा सरकार ने रोजगार देने के नाम पर प्रदेश के युवाओं के साथ भद्दा मजाक किया है। यह सरकार महज हवाई आंकड़ों के सहारे लाखों नौकरियां देने का ऐलान करते हुए अपनी जिम्मेदारियों की इतिश्री कर लेती है।

दरअसल भाजपा सरकार नौजवान विरोधी है। भाजपा सरकार ने नौजवानों को धोखा दिया है। यूपी सरकार की एजेंडे में नौकरी और रोजगार नहीं है। नौजवानों को भ्रमित करने के लिए भाजपा चुनाव के दौरान झूठे वादे करती है। भाजपा ने कभी युवाओं और नौजवानों को हर साल 2 करोड़ नौकरी रोजगार देने का वादा किया था।

केंद्र की 11 और प्रदेश की 8 साल सरकार चलाने के बाद भी भाजपा पूरे कार्यकाल में नौजवानों को 2 करोड़ रोजगार और नौकरी नहीं दे पाई। भाजपा सबसे ज्यादा झूठ बोलने वाली पार्टी है। उसने युवाओं को सपने दिखाकर भावनात्मक रूप से छलने का काम किया है।

भाजपा अभी भी नौजवानों को छलने और झूठ बोलने से बाज नहीं आ रही है। भाजपा सरकार ने संपूर्ण उत्तर प्रदेश के भावी प्राथमिक शिक्षकों को मायूस करके, उन्हें प्रयागराज में नई प्राथमिक शिक्षक भर्ती निकालने के लिए 'महाधरना' देने पर मजबूर कर दिया है। 7 सालों से डीएलएड की भर्ती न निकालकर भाजपा सरकार ने साबित कर

दिया है कि प्राथमिक शिक्षा उसकी प्राथमिकता ही नहीं है।

सच्चाई तो ये है कि भाजपा शिक्षा, स्वास्थ्य, नौकरी-रोज़गार जैसे बुनियादी मोर्चों पर पूरी तरह फ़ेल साबित हुई है। कुल मिलाकर भाजपा एक नाकामयाब सरकार है।

पिछले दिनों भाजपा सरकार ने लाखों युवाओं के लिए 1 लाख 93 हजार शिक्षक भर्ती का शिगूफा छोड़ा। सरकार के सोशल मीडिया एकाउंट से इस बारे में पोस्ट किया गया। कुछ देर बाद उसे हटा दिया गया। दरअसल भाजपा की कार्य प्रणाली यही है, इस सरकार का इतिहास जन भावनाओं से खेलने का रहा है।

इसी तरह से इन्वेस्ट मीट के नाम पर बड़े-बड़े आयोजन कर युवाओं को लाखों-करोड़ों नौकरी के सपने दिखाए गये । बड़े-बड़े उद्योगपति आये लेकिन प्रदेश में कही भी फैक्ट्री और कम्पनी लगती नही दिखी। भाजपा सरकार से सभी को मायूसी हुई है।

नारा तो आत्मनिर्भरता का दिया जा रहा है पर लेकिन पर्दे और मंच के पीछे विदेशियों से तैयार माल मंगाने और उनके लाए गये माल को बेचने के सौदे किये जाते हैं। देश की अर्थव्यवस्था बने-बनाए माल मंगाने से नहीं बल्कि देश के अंदर माल बनाने से सशक्त होगा। भाजपा सरकार विभागों का निजीकरण करके सब कुछ बेचने पर उतारू है। भाजपा सरकार किसी को नौकरी तो दे नहीं सकती, जिनकी नौकरी है उन्हें भी छीनना चाहती है। भाजपा ने लाखों नौजवानों को धोखा दिया है। यह धोखेवाली सरकार है, इसने हर वर्ग को धोखा दिया है।

ऐसा लगता है कि पूरी सरकार सत्ता के अहंकार में अंधी हो चुकी है। वास्तव में भाजपा किसी की सगी नहीं है। चुनाव में बड़े-बड़े वादे करने वाली भाजपा का असली चेहरा अब सबके सामने है।

भाजपा हर वर्ग के अधिकारों को छीन रही है। कर्मचारियों, शिक्षकों, नौजवानों, किसानों की आवाज दबाने के लिए वह किसी हद तक जा सकती है। इस सरकार से हर वर्ग पीड़ित है। 2027 के विधानसभा चुनाव में पूरा प्रदेश एकजुट होकर भाजपा के अहंकारी शासन का अंत कर देगा।

भाजपा राज में
स्वास्थ्य सेवाएं खुद ही बीमार

बुलेटिन ब्यूरो

उत्तर प्रदेश में भाजपा सरकार के राज में जनसुविधाओं का हाल बेहाल है। सर्वाधिक बुरी स्थिति स्वास्थ्य सेवाओं की है। भाजपा सरकार में प्रदेश की स्वास्थ्य व्यवस्था चौपट हो गयी है। अस्पतालों में मरीजों का इलाज कम दुर्व्यवहार की घटनाएं ज्यादा हो रही हैं। स्वास्थ्य विभाग भ्रष्टाचार की गिरफ्त में है।

विभागीय मंत्री अस्पतालों, चिकित्सालयों की व्यवस्था सुधारने और मरीजों के इलाज के बजाय दूसरे कामों में व्यस्त हैं। आत्मप्रचार उनकी प्राथमिकता है। नतीजतन उन्हें आम जनता और मरीजों की समस्याओं और परेशानी से कोई मतलब नहीं है।

अपने विभागीय कार्यों में असफल होने के बाद वे ध्यान भटकाने के लिए दूसरों पर कीचड़ उछालने के कार्य में ज्यादा रूचि ले रहे हैं। उत्तर प्रदेश में स्वास्थ्य सेवाओं को

बर्बाद करने वाले बड़बोले मंत्री को जनता 2027 के विधानसभा चुनाव में जरूर सबक सिखायेगी।

प्रदेश में सरकारी और निजी अस्पतालों में मनमानी चरम पर है। भाजपा सरकार मरीजों और उनके तीमारदारों को इलाज और न्याय दिलाने के बजाय पीड़ितों पर लाठीचार्ज करती है। अस्पतालों में दवा, जांचें और उचित इलाज नहीं मिल रहा है। गरीब सरकारी और निजी अस्पतालों के बीच भटकने पर मजबूर हैं। अस्पतालों में कहीं डॉक्टर नहीं हैं, कहीं स्ट्रेचर और बेड नहीं है तो कहीं जांचें ठप्प हैं। स्वास्थ्य विभाग इलाज और सुविधाओं की जगह भ्रष्टाचार और आगजनी की घटनाओं के लिए पहचान बना चुका है।

सरकारी अस्पतालों में इलाज के अभाव में थक हार कर मरीज निजी अस्पतालों में जाने को मजबूर हो रहे है। निजी अस्पतालों में इलाज के नाम पर लूट हो रही है। कन्नौज के छिबरामऊ में निजी अस्पताल में डाक्टरों की लापरवाही से एक बेटी रूचि गुप्ता को जान गंवानी पड़ी। बेटी के लिए न्याय मांगने वालों पर सरकार ने अत्याचार किया। न्याय के लिए धरना प्रदर्शन कर रहे लोगों पर भाजपा सरकार की पुलिस ने लाठीचार्ज किया। कन्नौज के भाजपा नेताओं और सरकार का आरोपियों को संरक्षण है।

इन्हीं हालातों के चलते उत्तर प्रदेश में पूरी स्वास्थ्य व्यवस्था बदहाली में डूबती जा रही है। सरकारी स्वास्थ्य सेवाओं से मरीजों का भरोसा उठता जा रहा है। जिलों में मेडिकल कॉलेज के नाम पर केवल बिल्डिंगे खड़ी है। समाजवादी सरकार में जौनपुर, आजमगढ़, जालौन, कन्नौज समेत कई जिलों में मेडिकल कॉलेज बनाए गये। लखनऊ में विश्वस्तरीय कैंसर संस्थान बनाया गया। लेकिन इस सरकार ने इलाज और सुविधाओं के लिए पर्याप्त बजट तक नहीं दिया है।

(फोटो स्रोत : गूगल)

आसमान छू रही महंगाई

सरकार बेखबर

फोटो स्रोत : गूगल

बुलेटिन ब्यूरो

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव ने कहा है कि भाजपा महंगाई की चैंपियन है। भाजपा सरकार पहले 'मुनाफ़ाखोरी' घटाए और 'भाजपाई चंदाखोरी' मिटाए फिर महंगाई घटाने की बात करे। श्री अखिलेश यादव ने कहा कि खाद्य तेल पर लगने वाले आयात शुल्क को घटाने का फ़ायदा जनता को भी मिलना चाहिए, न कि केवल घरेलू उत्पादकों को। लागत घट रही है तो खुदरा मूल्य भी घटना चाहिए। कहीं ऐसा तो नहीं कि ये दिखावटी आयात शुल्क कटौती बस कुछ ख़ास आयातकों और उत्पादकों के फ़ायदे के लिए ही है, जनता के लिए नहीं। उन्होंने कहा चलो इससे ये बात तो साबित हुई कि भाजपा सरकार ने मान लिया है कि बेतहाशा महंगाई ने जनता की कमर तोड़ रखी है और अब अगर इस रिकॉर्ड तोड़ महंगाई को नहीं रोका गया तो जनता भाजपाइयों के घर के बाहर तेल के खाली डिब्बे बजाने लगेगी।

श्री अखिलेश यादव ने कहा भाजपा सरकार खाद्य सामग्री की लागत-लाभ के अनुपात को तार्किक रूप से जनता के पक्ष में तय कर दे मतलब जनहित में ये फ़ैसला ले कि एक निश्चित प्रतिशत से अधिक कोई भी खाद्य उत्पादक मुनाफ़ा नहीं कमाएगा, लेकिन इसके लिए पहले भाजपा सरकार को ये भी क़सम खानी पड़ेगी कि वो कम-से-कम खाद्य कंपनियों से तो 'भाजपाई चंदा वसूली' नहीं करेगी क्योंकि भाजपा जब कंपनियों से चंदा वसूलती है तब कंपनियाँ उस चंदा वसूली के पैसों को लागत का हिस्सा मानकर जनता से ही वसूलती हैं। हर टैक्स और चंदा आख़िरकार जनता से ही वसूला जाता है। इसीलिए 'भाजपाई चंदा', टैक्स के अलावा जनता पर भाजपा की दोहरी मार बनता है और महंगाई का कारण भी। अब तो अर्थशास्त्रियों को विक्रय मूल्य में 'भाजपाई चंदा वसूली' को भी जोड़ने का नया गणितीय फ़ार्मूला बना लेना चाहिए। भाजपा अपनी चंदा वसूली बंद कर दे तो हर वस्तु और सेवा के दाम वैसे ही कम हो जाएंगे।

श्री अखिलेश यादव ने कहा कि दाम बंदी' भाजपा की कारोबारी मानसिकता में दरअसल कभी नहीं रही है। महंगाई पर नियंत्रण के लिए जनता की भलाई करनेवाली नीयत और इच्छाशक्ति ज़रूरी होती है, जो भ्रष्टाचार के लक्ष्य की पूर्ति के लिए हासिल की गयी भाजपा जैसी मुनाफ़ाख़ोर सत्ता के पास कभी नहीं होती है। इसीलिए आयात शुल्क घटे और जनता के लिए वस्तुओं के दाम भी घटें, तब ही ऐसी घोषणाओं का फ़ायदा है। अब देखना ये है कि कुछ दिनों बाद खाद्य तेलों के दाम गिरने की ख़बरें आती भी हैं या नहीं या फिर ग़रीब की थाली से तेल ही गायब हो जाएगा। ग़रीब कहे आज का, नहीं चाहिए भाजपा।

जीरो टॉलरेंस का दावा बेकार

यूपी में भ्रष्टाचार अपार

बुलेटिन ब्यूरो

भ्रष्टाचार के मामले में जीरो टॉलरेंस का राग अलापने वाले उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री जी के दावों की सच्चाई कुछ और ही है। दरअसल उत्तर प्रदेश की भाजपा सरकार सबसे भ्रष्ट सरकार है। हकीक़त यह है कि भ्रष्टाचार का फव्वारा मुख्यमंत्री जी के जीरो टॉलरेंस के दावा की धज्जियां उड़ा रहा है।

इस सरकार में हर विभाग में भारी भ्रष्टाचार और लूट है। भाजपाई जनता के पैसे की लूट कर रहे है। जल जीवन मिशन से लेकर धान, गेंहू खरीद, इन्वेस्ट यूपी और एक्सप्रेस-वे निर्माण तक कहीं कोई विभाग और कार्य भाजपा के भ्रष्टाचार से अछूता नहीं है।

प्रदेश में हर घर जल को लेकर भाजपा सरकार ने बहुत शोर मचाया लेकिन प्रदेश में लोगों के घरों में जल नहीं पहुंचा। हर जिले, हर गांव और गली में भ्रष्टाचार साफ दिखाई दे रहा है। जल जीवन मिशन के नाम पर बन रही पानी की टंकियां भाजपाइयों के भ्रष्टाचार के भार को नहीं सह पा रही है।

पानी की टंकियां टेस्टिंग के दौरान फट जा रही है। पाइप लाइनें टेंस्टिंग में ही टूट रही है। लखीमपुर खीरी में करोड़ों की लागत से बनी पानी की टंकी ट्रायल में फट गयी। उन्नाव में जल जीवन मिशन की पाइप कई जगह फट गयी। यह तो सिर्फ उदाहरण है। पूरे प्रदेश में यही हाल है।

सरकार के दावों की असलियत सामने आ गयी है। इसी तरह से प्रदेश में धान खरीद में बड़े पैमाने पर भ्रष्टाचार हुआ है। सिद्धार्थनगर जिले समेत कई स्थानों पर बिना धान खरीद के पैसे का बंदरबांट हो गया। प्रदेश में इन्वेस्टमेंट के नाम पर भी जमकर कमीशनखोरी और भ्रष्टाचार चल रहा है। सरकार के करीबी अधिकारी निवेश और इन्सेंटिव के नाम पर कमीशन खा रहे है। यह कमीशन ऊपर से नीचे तक बंटता है।

भ्रष्टाचार में शामिल आईएएस अधिकारी तक भागे हुए हैं। यह सब भ्रष्टाचार सत्ताशीर्ष के संरक्षण में हो रहा है। ईमानदारी का झूठा ढोंग करने वाली सरकार ने एक्सप्रेस-वे परियोजनाओं में भारी लूट किया है। बुन्देलखंड एक्सप्रेस-वे तो प्रधानमंत्री जी के उद्घाटन करने के बाद ही धंस गया। उसका मेंटेनेंस अभी भी चल रहा है। पूर्वांचल एक्सप्रेस-वे से बनने वाले गोरखपुर लिंक एक्सप्रेस-वे में भ्रष्टाचार और लूट का गोरखधंधा अभी भी जारी है। इससे पहले सड़क गड्ढ़ामुक्त करने के नाम पर जो भ्रष्टाचार हुआ उससे सभी लोग परिचित हैं।

अखिलेश ही ला सकते हैं यूपी को फिर पटरी पर

बुलेटिन ब्यूरो

उत्तर प्रदेश की बिगड़ती कानून-व्यवस्था, भ्रष्टाचार, महंगाई और बेरोजगारी के सवालों पर पूरी तरह फेल हो चुकी भाजपा सरकार से यूपी की जनता भी अब नाउम्मीद हो चुकी है।

उत्तर प्रदेश में चौतरफा मचे हाहाकार ने जनता को ऐसा त्रस्त कर दिया है कि अब वह भाजपा सरकार से मुक्ति पाना चाहती है। यूपी के सभी कोनों से अब आवाज बुलंद होने लगी है कि यूपी की बदहाली दूर करने के लिए श्री अखिलेश यादव का मुख्यमंत्री बनना जरूरी है।

श्री अखिलेश यादव के दौरों के दौरान लोगों की आशाएं, आकांक्षा और उम्मीदें साफ दिख रही हैं। प्रदेश में श्री अखिलेश यादव के

पक्ष में माहौल बन चुका है और इंतजार 2027 का है ताकि उनकी ताजपोशी कर यूपी को विकास की पटरी पर एक बार रफ्तार दी जा जा सके।

ऐसा इसलिए क्योंकि जनता ने 2012 से 2017 वाली अखिलेश सरकार को देखा है। आज की परिस्थितियों में जनता श्री अखिलेश यादव को बेहतर ही नहीं बेहतरीन विकल्प के रूप में देख रही है। नौजवानों को श्री अखिलेश यादव से बहुत आस है और उन्हें लगता है कि समाजवादी सरकार में ही अब उन्हें नौकरी या रोजगार मिल पाएगा। यही वजह है कि यूपी के विभिन्न जिलों का दौरों पर जाने पर नौजवान तबका श्री अखिलेश यादव को घेर लेता है और उम्मीद भरे नारों से उनका स्वागत करता है।

समाजवादी सरकारों में यूपी में जितने काम हुए हैं, शायद ही किसी सरकार ने ऐसे काम किए हों। कन्या विद्या धन योजना हो या फिर छात्रों को लैपटा ॅप देकर तकनीक से जोड़ने की महत्वाकांक्षी योजना या फिर समाजवादी पेंशन योजना। सब समाजवादी सरकार में ही हुआ।

समाजवादी पार्टी के संस्थापक श्री मुलायम सिंह यादव का कार्यकाल रहा हो या फिर श्री अखिलेश यादव की सरकार, काम बोलता था और आज भी वे काम धरातल पर साफतौर पर दिखते हैं। इसके उलट भाजपा सरकार में सिर्फ जुमलेबाजी होती दिख रही है।

यूपी में पिछले 8 साल और देश में 11 साल से भाजपा की सरकार है। भाजपा ने सरकार में आने से पहले रा ेजगार देने और महंगाई को काबू में करने के बहुतेरे वायदे किए थे पर अब जब उसके कार्यकाल की समीक्षा की जाती है तो जनता ठगी महसूस कर रही है। महंगाई आसमान छू रही है और नौकरियां खत्म की जा रही हैं। भाजपा सरकार में जिस तरह आईएएस अफसरों तक के भ्रष्टाचार सामने आ रहे हैं, वह उसके दावों को पोल खोलते दिखते हैं। तहसील से लेकर थानों तक भ्रष्टाचार की खबरें सुर्खियां बन रही हैं और भाजपा सरकार झूठे विज्ञापनों पर सरकारी खजाने को लुटाने में जुटी हुई है।

जनता ने 2012 से 2017 वाली अखिलेश सरकार को देखा है। आज की परिस्थितियों में जनता श्री अखिलेश यादव को बेहतर ही नहीं बेहतरीन विकल्प के रूप में देख रही है। नौजवानों को श्री अखिलेश यादव से बहुत आस है और उन्हें लगता है कि समाजवादी सरकार में ही अब उन्हें नौकरी या रोजगार मिल पाएगा

यूपी में भाजपा सरकार ने 2017 में आते ही कानून-व्यवस्था को दुरुस्त करने का वायदा किया था मगर हो बिल्कुल उल्टा रहा है। सिपाही तक की हत्या हो जा रही है और महिलाओं के अपराध में इजाफा हुआ है। नारी हिंसा में वृद्धि का आलम यह है कि राष्ट्रीय अपराध अनुसंधान ब्यूरो तक कह चुका है कि महिला अपराध में यूपी अव्वल है।

यह तब है जबकि समाजवादी पार्टी सरकार ने अपने पांच साल के कार्यकाल में पुलिस सुधार के लिए कई योजनाएं शुरू की। महिला अपराध रोकने के लिए श्री अखिलेश यादव ने डायल 1090 की सुविधा शुरू की थी जिसे कई और राज्यों ने अपनाया। मगर भाजपा सरकार ने इस सेवा को ऐसा पलीता लगाया कि अब वहां पहले जैसे हालात नहीं हैं।

यूपी में दुष्कर्म, छेड़खानी और महिला हत्या की वारदातें भी बढ़ गई हैं। ऐसा नहीं है कि सिर्फ महिलाओं के प्रति अपराध बढ़े हैं बल्कि भाजपा राज में तो सिपाही और आम आदमी भी सुरक्षित नहीं रह गया है। हत्याएं आम बात हो गई हैं। दरअसल भाजपा सरकार की गलत नीतियों के कारण पुलिस बेलगाम हो चुकी है और वह पूरी तरह भ्रष्टाचार में लिप्त है। पूरा थाना वसूली करते पकड़ा जा रहा है। तहसीलों में भी रिश्वत और वसूली बढ़ गई है।

भाजपा सरकार में किसानों के साथ भी अन्याय हो रहा है। उनकी फसलों को खरीदने में भी मनमानी और दुव्यर्वस्था का बोलबाला है। फसलों को उचित दाम भी नहीं मिल रहे हैं। नौकरियों के अभाव में नौजवान डिग्रियां लेकर घूम रहा है और सरकार पूंजीपतियों को लाभ पहुंचाने में जुटी हुई है। बिजली, स्वास्थ्य, जैसी सुविधाएं आम आदमी को सीधे तौर पर प्रभावित करती हैं और यह सब ध्वस्त हो चुकी हैं।

बुद्धिजीवी वर्ग भी अब यह कह रहा है कि श्री अखिलेश यादव से बेहतर कोई राजनेता नहीं है और उनकी सरकारों में जितने ठोस काम हुए, भाजपा 8 साल में नहीं कर पाई। लखनऊ-आगरा एक्सप्रेसवे से लगायत

मेट्रो, इकाना स्टेडिया, पुलिस मुख्यालय भवन हो या प्रदेश के जिलों में हुए कामकाज, आज भी यह गवाही देते हैं कि समाजवादी सरकार में हुए विकास कार्य की कोई बराबरी नहीं कर सकता।

श्री अखिलेश यादव की सौम्यता, शालीनता, आचरण, संवेदनशीलता और विजन और सकारात्मक सोच को जनता ने हमेशा सराहा है। अब वह राष्ट्रीय राजनीतिक फलक पर भी मजबूत राजनेता के तौर पर स्थापित हो चुके हैं।

उत्तर प्रदेश व देश की खुशहाली के लिए सदैव तत्पर रहने की उनकी गतिशीलता का ही नतीजा रहा कि यूपी की जनता ने 2024 के लोकसभा चुनाव में श्री अखिलेश यादव के PDA प्रयोग के प्रति पूर्ण समर्थन प्रदान करते हुए समाजवादी पार्टी को 37 सीटें जिताकर देश की तीसरी सबसे बड़ी पार्टी बना दिया। यह जनता की उम्मीदों-आकांक्षाओं का सबसे मजबूत उदाहरण हैं।

2024 लोकसभा चुनाव के बाद अब 2027 का विधानसभा चुनाव होना है। जनता का रुझान बता रहा है कि वह 2024 की तरह ही विधानसभा चुनाव में भी समाजवादी पार्टी को भरपूर समर्थन देने का मन बना चुकी है।

जिस तरह यूपी की कानून-व्यवस्था की स्थिति बिगड़ी है और भ्रष्टाचार बढ़ रहा है, वह आमजन को परेशान कर रहे हैं। जनता देख-समझ रही है कि भाजपा सरकार श्री अखिलेश यादव के कार्यकाल में हुए काम का ही प्रधानमंत्री से उद्घाटन कराकर अपनी पीठ खुद ही थपथपा रही है और सरकारी धन का इस्तेमाल भाजपा के प्रचार के लिए कर रही है।

यूपी का व्यापारी भी भूला नहीं है कि समाजवादी सरकारों ने उन्हें रियायतें दी और भाजपा सरकार ने जीएसटी के नाम पर उनका उत्पीड़न किया। ऐसे कई मौके आए जब जीएसटी की छापेमारी से व्यापारियों को बाजार बंद कर इधर-उधर भागना पड़ा तब श्री अखिलेश यादव उनके पक्ष में मुखर हुए और उत्पीड़न रोकने के लिए डटकर खड़े हो गए।

किसी के साथ अन्याय-अत्याचार होने पर सबसे पहले श्री अखिलेश यादव ही डटकर सामने आ जाते हैं। यही कारण है कि समाज का सभी तबका अब मन बना चुका है कि उत्तर प्रदेश की बदतर हो चुकी व्यवस्था को फिर पटरी पर लाने के लिए श्री अखिलेश यादव की सरकार बनाना जरूरी है।

अखिलेश के लिए बढ़ता जा रहा है जनसमर्थन

बुलेटिन ब्यूरो

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव को उत्तर प्रदेश के जिलों के दौरों के दौरान मिल रहा भरपूर समर्थन यह स्पष्ट संकेत दे रहा है कि आमजन को श्री अखिलेश यादव से काफी उम्मीदें हैं।

यह उम्मीदें 2027 में समाजवादी सरकार बनने पर ही पूरी होंगी, इस भरोसे से आमजन श्री अखिलेश यादव के पक्ष में पूरी तरह आ गए हैं और उन्हें इंतजार है 2027 के चुनाव का ताकि वे श्री अखिलेश यादव की ताजपोशी कर सकें।

15 मई को श्री अखिलेश यादव अमेठी पहुंचे तो उनके स्वागत में जनसैलाब उमड़ पड़ा। उनके समर्थन में नारे लगाए और मिशन 2027 में जीत के लिए व्यापक समर्थन देने का भरोसा दिलाया।

मीडिया से बातचीत में श्री अखिलेश यादव ने कहा कि समाजवादी पार्टी 2027 के विधानसभा की तैयारी जमीन पर कर रही है। भाजपा सरकार में भ्रष्टाचार और लूट चरम पर है। उन्होंने कहा कि जानकारी मिली है कि गोमती रिवर फ्रंट पर लगाने के लिए लाया गया फव्वारा भाजपा सरकार में चोरी हो गया। फव्वारा चोर लोग अब सत्ता में नहीं आएंगे।

नव्या की चाय

अखिलेश का आशीर्वाद

बुलेटिन ब्यूरो

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव ने एक बार फिर साबित कर दिया कि वह और राजनेताओं से अलग हैं। चाय की दुकान चलाने वाली कुमारी नव्या के आग्रह को श्री अखिलेश यादव टाल नहीं सके और उनकी दुकान पर जाकर चाय पी। आशीर्वाद दिया। खूब हौसला आफ़ज़ाई की। श्री अखिलेश यादव के बड़प्पन से नव्या आह्लादित हो गईं।

16 मई को श्री अखिलेश यादव पूर्व सांसद छोटे सिंह यादव से भेंट करने मेदांता हास्पिटल पहुंचे थे। वहां उन्होंने श्री यादव के स्वास्थ्य का हालचाल जाना। श्री अखिलेश यादव के मेदांता अस्पताल पहुंचने की जानकारी मिलने पर वहां पास में दो प्याली चाय की दुकान चलाने वाली नव्या ने श्री यादव से मुलाकात की और अपनी दुकान पर चाय पीने का आग्रह किया। श्री अखिलेश यादव इस आग्रह को टाल नहीं पाए और वहां पहुंच गए। कु नव्या ने स्वयं चाय बनाकर पिलाई। श्री अखिलेश यादव ने चाय पीने के साथ नव्या के साहस की सराहना की और आशीर्वाद दिया।

चाय पीने के दौरान श्री अखिलेश यादव ने कहा कि सरकार को छोटे दुकानदारों की बड़ी मदद करनी चाहिए। उन्हें प्रोत्साहित करना चाहिए। छोटे दुकानदार और कारोबारी अर्थव्यवस्था की रीढ़ हैं। अगर सरकार से छोटे दुकानदारों को मदद मिले तो प्रदेश जल्दी ही वन ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बन सकता है। छोटे कारोबारियों को उजाड़ना नहीं चाहिए। उनकी समस्याओं का समाधान करना चाहिए।

श्री अखिलेश यादव के साथ समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय सचिव एवं पूर्व मंत्री राजेन्द्र चौधरी भी मौजूद रहे।

एक सवाल के जवाब में श्री अखिलेश यादव ने कहा कि भाजपा अमेठी में गुमशुदा है। जब भाजपा ही भाजपा की सगी नहीं है तो उनके साथ गए दलबदलू और एहसान फरामोश लोगों के लिए भाजपा कितना सगी होगी। जिन लोगों ने समाजवादी पार्टी से पाला बदलकर धोखा दिया है अब वह दोबारा नहीं जीत पाएंगे क्योंकि वे एहसान फरामोश, दगाबाज और दल बदलू हैं। ऐसे लोगों की कहीं जगह नहीं होती है।

उन्होंने कहा कि देश के लिए शांति सर्वोपरि है लेकिन संप्रभुता सबसे ऊपर है। भारत के अंदरूनी मामलों में किसी दूसरे देश का हस्तक्षेप स्वीकार्य नहीं है, यही हमारे संविधान और लोकतंत्र की सबसे बड़ी ताकत है। संप्रभुता हमारी सबसे बड़ी पहचान है।

सपा मुखिया ने कहा कि सीमाएं सुरक्षित रहें और देश आर्थिक रूप से शक्तिशाली बने इसके लिए सरकार को ठोस कदम उठाने पड़ेंगे। सरकार सीमाओं की सुरक्षा का पुख्ता इंतजाम करें, जिससे फिर किसी तरह की घुसपैठ और सुरक्षा में चूक न हो।

सीमा पर सुरक्षा इंतजाम इतना बेहतर होना चाहिए जिससे चूक की कोई गुंजाइश न हो। सीमाएं जितनी सुरक्षित होंगी देश उतना आगे बढ़ेगा। उन्होंने कहा कि भाजपा सरकार में पहले भी सुरक्षा में कई बार चूक हो चुकी है। भाजपा सरकार चूक, फूट, और लूट के लिए जानी जाएगी।

श्री अखिलेश यादव ने कहा कि जश्न जीत का मनाया जाता है, सीज का नहीं। भाजपा के लोग देश की जनता को धोखा देना चाहते है। जनता जागरुक और समझदार है। समय आने पर भाजपा को सबक सिखाएगी।

श्री यादव ने कहा कि कर्नल सोफिया कुरैशी पर मध्य प्रदेश के भाजपा सरकार के मंत्री की शर्मनाक टिप्पणी और बलिया के बीजेपी नेता के वायरल वीडियो से भाजपा का चाल, चरित्र और चेहरा जनता के सामने उजागर हो गया है।

उन्होंने कहा कि भाजपा नेताओं का यह चरित्र और चेहरा कोई पहली बार नहीं दिखाई दे रहा है। ये लोग हमेशा से ही ऐसा करते रहे हैं। भाजपा का नारी वंदन सिर्फ नारों में है। जब नारी सम्मान और रक्षा की बात आती है तो भाजपा का असली चेहरा उजागर हो जाता है।

श्री अखिलेश यादव ने कहा कि कर्नल सोफिया कुरैशी सैन्य अभियान को देश और दुनिया के सामने लगातार ब्रीफ कर रही थीं। सेना के सैन्य अभियान की ब्रीफिंग करने वाली बहादुर कर्नल के बारे में भाजपा सरकार के मंत्री का इस तरह का बयान बेहद निंदनीय है। भाजपा के मंत्री का बयान केवल एक उच्च सैन्य महिला अधिकारी का ही नहीं बल्कि देश की हर नारी का अपमान है। भाजपा के ये मंत्री सदैव से भाजपाई और उनके संगी साथियों के नारी विरोधी सोच के मुखपत्र रहे हैं। कुछ वर्षों पहले उन्होंने देश की एक प्रतिष्ठित अभिनेत्री के कार्य में बाधा डाली थी। अगर उसी समय कार्रवाई हो गई होती तो आज उन्हें कर्नल सोफिया कुरैशी पर टिप्पणी करने का मौका नहीं मिलता।

श्री यादव ने कहा कि भाजपा की नारी शक्ति वंदन अभियान जैसी झूठी घोषणाओं का सच ऐसे लोगों के कुविचार खोल देते हैं। ऐसे लोग मंत्री तो क्या किसी गली-मोहल्ले तक के जनप्रतिनिधि लायक नहीं हैं। सवाल यह है कि इन्हें भाजपा वाले स्वयं हटाएंगे या इनके खिलाफ एकजुट नारी शक्ति और जनता हटाएगी।

चुनावी तैयारियों में कोई कमी न रखें कार्यकर्ता

- अखिलेश

बुलेटिन ब्यूरो

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव ने कहा है कि 2027 के विधानसभा चुनाव की तैयारी में कोई कमी नहीं होनी चाहिए। भाजपा बेईमान और धोखेबाज पार्टी है। चुनाव में बेईमानी करती है। श्री अखिलेश यादव ने कहा है कि भाजपा का चरित्र अलोकतांत्रिक है। इसका आचरण अधिनायकवादी है। भाजपा भारतीय संविधान के लिए चुनौती बन गयी है। भाजपा उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव में अराजकता पैदा करना चाहती है।

उन्होंने कहा कि निर्वाचन आयोग की जिम्मेदारी निष्पक्ष चुनाव कराने की होती है। निर्वाचन आयोग को ईमानदारी से अपनी भूमिका का निर्वहन करना चाहिए।

समाजवादी पार्टी प्रदेश मुख्यालय लखनऊ के डॉ. राममनोहर लोहिया सभागार में 10 एवं 11 जून को प्रदेश के विभिन्न जिलों से आये कार्यकर्ताओं और नेताओं को सम्बोधित करते हुए श्री अखिलेश यादव ने कहा कि भाजपा सरकार में अन्याय, अत्याचार, भ्रष्टाचार और अपराध चरम पर है। अपराधी खुलेआम घटनाएं कर रहे है। दिन दहाड़े हत्यायें हो रही है। अपराधियों को सरकार का संरक्षण है। उपमुख्यमंत्री निर्दोषों पर फर्जी केस लगवाकर प्रताड़ित करा रहे हैं।

श्री अखिलेश यादव ने कहा कि भाजपा सरकार की जुल्म ज्यादती के खिलाफ समाजवादी पार्टी हर स्तर पर लड़ रही है। पीड़ितों की मदद करती है। समाजवादी पार्टी प्रदेश की पीड़ित, दुखी जनता, किसान, नौजवान, पीडीए के साथ हैं। भाजपा पीडीए के साथ भेदभाव कर रही है। भाजपा सबसे बड़ी जातिवादी पार्टी है। समाजवादी पार्टी

पीडीए को न्याय और सामाजिक न्याय दिलाने की लड़ाई लड़ रही है। पीडीए की एकता से भाजपा घबराई हुई है। पीडीए की लड़ाई को मजबूत करके और ताकत देना है। श्री अखिलेश यादव ने कहा कि भाजपा सरकार हर मोर्चे पर विफल रही है। भाजपा ही केन्द्र सरकार ने 11 साल और प्रदेश सरकार ने आठ साल में कोई उल्लेखनीय कार्य नहीं किया है। भाजपा ने समाज में नफरत फैलाया। भेदभाव किया। संवैधानिक संस्थाओं को कमजोर किया। अर्थव्यवस्था को बर्बाद कर दिया। सरकारी सम्पत्तियों को निजी हाथों को बेच दिया। महंगाई बढ़ा दी। जनता से किया वादा पूरा नहीं किया। किसानों, नौजवानों से झूठ बोला। विपक्षी दलों के नेताओं को झूठे और फर्जी मुकदमों में फंसा कर प्रताड़ित किया।

श्री अखिलेश यादव ने कहा है कि इस सरकार में भ्रष्टाचार और लूट के सारे रिकार्ड टूट गये। जल जीवन मिशन भााजपा की लूट का मिशन बन गया। जल जीवन मिशन के तहत बनी पानी की टंकियां भाजपा के भ्रष्टाचार का भार नहीं शह पा रही है। पानी की टंकियां भरभरा कर गिर रही है। सरकार को बताना चाहिए की पानी की टंकियां लगातार क्यों गिर रही है। प्रदेश में बिजली की मांग 32 हजार मेगावाट तक पहुंच गई है। गांवों को बिजली नहीं मिल रही है। शहरों में अघोषित कटौती हो रही है। लोग बिजली पानी के संकट से जूझ रहे है। जनता में भारी आक्रोश है। भाजपा सरकार ने आठ साल के कार्यकाल में एक भी यूनिट बिजली उत्पादन नहीं बढ़ाया। समाजवादी सरकार के दौरान में बिजली उत्पादन बढ़ाने के लिए कई पावर प्लांट लगवाए। प्रदेश के पांच शहरों में मेट्रो रेल लाने का काम किया लेकिन भाजपा सरकार ने समाजवादी सरकार में किये गये विकास कार्यों को रोक दिया।

श्री अखिलेश यादव ने कहा है कि प्रदेश की जनता भाजपा सरकार के भ्रष्टाचार, अन्याय, अत्याचार से बेहद नाराज है। प्रदेश की जनता भाजपा सरकार को अब और बर्दाश्त नहीं करेगी। 2027 के विधानसभा चुनाव में समाजवादी पार्टी की सरकार बनना तय है।

इस अवसर पर नेता विपक्ष माता प्रसाद पाण्डेय, पूर्व सांसद श्री उदय प्रताप सिंह, राष्ट्रीय सचिव श्री राजेन्द्र चौधरी, राज्यसभा सदस्य श्री जावेद अली, सांसद श्री आरके चौधरी, सांसद श्री नरेश उत्तम पटेल, प्रदेश अध्यक्ष श्री श्याम लाल पाल, पूर्व मंत्री एवं विधायक श्री शाहिद मंजूर, पूर्व मंत्री एवं विधायक श्री राममूर्ति वर्मा, विधायक श्री अतुल प्रधान, विधायक श्री प्रदीप यादव, पूर्व मंत्री डॉ. पीके राय, पूर्व सांसद धर्मराज पटेल, विधायक श्री आशु मलिक, समेत बड़ी संख्या में नेता एवं कार्यकर्ता मौजूद रहे।

ऑपरेशन सिंदूर

सेना की बहादुरी पर देश को गर्व -अखिलेश

बुलेटिन ब्यूरो

ऑपरेशन सिंदूर में भारतीय सेना की शानदार कामयाबी पर समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव ने मुक्त कंठ से तारीफ की है। उन्होंने कहा है कि भारतीय सेना सबसे मजबूत, सशक्त और बहादुर है। हम सभी देशवासियों को अपनी सेना की बहादुरी पर गर्व है।

14 मई को समाजवादी पार्टी के प्रदेश मुख्यालय लखनऊ में प्रदेश के विभिन्न ज़िलों से आए कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए श्री अखिलेश यादव ने देश की प्रतिरक्षा सुरक्षा में राष्ट्रीय मिलिट्री स्कूल धौलपुर के योगदान की तारीफ करते हुए कहा कि यह परंपरा देश की आजादी से लेकर निरंतर चल रही है। उन्होंने कहा कि उत्तर प्रदेश में सच्चे देशप्रेमियों की, जो अनंत गौरवशाली परंपरा स्वतंत्रता सेनानियों से लेकर आज तक रही है, उसके आधार पर हमारी मांग है कि उत्तर प्रदेश के लखनऊ, सहारनपुर, कन्नौज, इटावा, वाराणसी, संत कबीरनगर जिले में नये मिलिट्री स्कूल खोले जाएं जिससे हमारे देश की अखंडता और एकता को चुनौती देने वाली ताक़तों को सही में निर्णायक जवाब दिया जा सके।

श्री अखिलेश यादव ने कहा कि आशा है कि वर्तमान संवेदनशील सामरिक परिस्थितियों को देखते हुए सरकार इस पर गंभीरता से

विचार करेगी और देशहित को देखते हुए, उत्तर प्रदेश में मिलिट्री स्कूलों की स्थापना की तत्काल घोषणा करेगी।

उल्लेखनीय है कि श्री अखिलेश यादव राष्ट्रीय मिलिट्री स्कूल धौलपुर के छात्र रहे हैं। उन्होंने कहा कि जहां चलती आई है महान परंपरा वीरता की, वहां हम सबको सीख मिलती है शूरता-शीलता की। उन्होंने कहा कि हम सब ने अपने आदर्श वाक्य 'शीलम परम भूषणम्' से देशभक्ति अनुशासन और पराक्रम के सीन चरित्र का बीज मिलने वाले राष्ट्रीय मिलिट्री स्कूल धौलपुर का देश की प्रतिरक्षा सुरक्षा में अभूतपूर्व योगदान रहा है।

इस अवसर पर पार्टी के राष्ट्रीय सचिव एवं पूर्व कैबिनेट मंत्री राजेन्द्र चौधरी, विधायकगण समर पाल सिंह, हिमांशु यादव एवं तसलीम अहमद, पूर्व सांसद एसटी हसन, पूर्व सांसद अरविन्द सिंह, पूर्व एमएलसी डॉ. मधु गुप्ता, श्री रामवृक्ष यादव, श्री जावेद आब्दी एवं श्री सलामतुल्लाह समेत अन्य लोग मौजूद रहे।

पूर्व फौजियों का सपा को समर्थन

बुलेटिन ब्यूरो

पूर्व सैनिकों के एक प्रतिनिधिमंडल ने समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव से भेंटकर उन्हें भरोसा दिलाया कि वे सभी 2027 में समाजवादी सरकार बनवाने के लिए दृढ़ संकल्पित हैं।

16 मई को श्री अखिलेश यादव से सैनिक लीग, इटावा के पूर्व जिलाध्यक्ष कैप्टन रघुराज सिंह की अगुवाई में कई प्रमुख रिटायर्ड सैन्य कर्मियों ने मुलाकात की और कहा कि श्री अखिलेश यादव को मुख्यमंत्री बनाने के लिए हम सभी सैनिक गांव-गांव, बूथ स्तर पर जनता को एकजुट करके भाजपा को सत्ता से हटाने का काम करेंगे।

इस अवसर पर श्री अखिलेश यादव ने कहा कि सेना के जवानों के शौर्य एवं देश भक्ति की जितनी सराहना की जाए, कम है। सीमा पर जिस तरह से हमारे जांबाज सैनिक विषम परिस्थितियों में भी हम सबकी रक्षा करते हैं, उसी तरह से लोकतंत्र और संविधान की रक्षा हमारे सैनिक करेंगे।

पूर्व सैनिकों ने 6 जनपदों लखनऊ, सहारनपुर, कन्नौज, इटावा, वाराणसी, संतकबीरनगर में मिलिट्री स्कूल की स्थापना की श्री अखिलेश यादव की मांग की सराहना की। उन्होंने नेताजी श्री मुलायम सिंह यादव के रक्षा मंत्री के समय शहीदों के पार्थिव शरीर को उनके परिवार तक ससम्मान पहुंचाने की व्यवस्था की भी याद दिलाई और कहा कि आज सैनिकों को जो सम्मान मिल रहा है वह उन्हीं की देन है। पूर्व सैनिक लीग के प्रतिनिधिमंडल में सर्वश्री कैप्टन लाइक सिंह, अनिल कुमार, महावीर सिंह एवं सुनील कुमार, सूबेदार मेजर सर्वश्री कृपाल सिंह, रामदास, सदन सिंह एवं रवि यादव तथा हवलदार सुबोध कुमार शामिल रहे।

सपा ही कर रही पीड़ितों की मदद

बुलेटिन ब्यूरो

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव की संवेदनशीलता जगजाहिर है। पीड़ितों की मदद के लिए वह हर संभव प्रयास करते रहे हैं और उनके साथ हमेशा खड़े हुए हैं। भाजपा के कुशासन से पीड़ित ऐसे सैकड़ों परिवार हैं जिनकी मदद को सरकार आगे नहीं आई मगर श्री अखिलेश यादव उनकी मदद करने में आगे-आगे रहे। ऐसे सैकड़ों उदाहरण हैं जब सरकार ने पीड़ितों का साथ छोड़ दिया तो श्री अखिलेश यादव ही सामने आए और उन तक मदद पहुंचाई।

12 जून को समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव के निर्देश पर समाजवादी पार्टी का प्रतिनिधिमंडल जनपद कौशाम्बी पहुंचा।

प्रतिनिधिमंडल ने सिराथू तहसील के ग्राम लोहदा निवासी जगेश्वर पाल की पुत्री से दबंगों द्वारा की गई रेप की घटना की जानकारी ली तथा पीड़ित परिवार से मिलकर संवेदना प्रकट करते हुए उन्हें न्याय दिलाने का भरोसा दिलाया।

प्रतिनिधिमंडल में सर्वश्री राजाराम पाल पूर्व सांसद, डॉ मान सिंह यादव एमएलसी, दयाशंकर यादव जिलाध्यक्ष समाजवादी पार्टी कौशाम्बी, डॉ अवधनाथ पाल पूर्व

जिलाध्यक्ष समाजवादी पार्टी जौनपुर, राकेश बघेल पूर्व जिला पंचायत अध्यक्ष, समरथ पाल प्रदेश सचिव, शहनवाज अहमद विधान सभा अध्यक्ष सिराथू आदि शामिल रहे।

प्रतिनिधिमंडल ने ग्राम लोहदा के ही निवासी श्री छोटका तिवारी उर्फ रामबाबू की आत्महत्या किए जाने की घटना की भी जानकारी ली और शोकाकुल परिवार से मिलकर शोक संवेदना प्रकट करते हुए उन्हें न्याय दिलाने का भरोसा दिलाया।

प्रतिनिधिमण्डल में सर्वश्री डॉ मान सिंह यादव एमएलसी, पवन पाण्डेय पूर्व मंत्री उप्र सरकार, सन्तोष पाण्डेय पूर्व विधायक, दयाशंकर यादव जिलाध्यक्ष समाजवादी पार्टी कौशाम्बी, शिवमूर्ति सिंह राना प्रदेश सचिव समाजवादी पार्टी उप्र सहित शहनवाज अहमद विधान सभा अध्यक्ष सिराथू शामिल रहे।

12 जून को ही श्री अखिलेश यादव के निर्देश पर समाजवादी पार्टी का एक प्रतिनिधिमंडल हरदोई जनपद के मल्लावां विधानसभा क्षेत्र के ग्राम मक्कापुरवा कटरी परसोला पहुंचा।वहां सूरजबली राजपूत की पत्नी श्रीमती रामश्री की दबंग व्यक्ति द्वारा दिनदहाड़े गोली मारकर हत्या तथा मल्लावां के ग्राम जरेरा बाबतमऊ में श्री नौरंग राजपूत की पुत्री संगीता राजपूत की गोली मारकर हत्या किये जाने की घटना का ब्योरा लिया। साथ ही महिलाओं-बुज़ुर्गों के साथ अमानवीय व्यवहार किए जाने की घटना को लेकर पीड़ित परिवारों से भेंटकर शोक संवेदना प्रकट की। पीड़ित परिवारों को मदद और न्याय का भरोसा दिलाया।

प्रतिनिधिमंडल में सर्वश्री श्री राहुल लोधी (राजपूत) विधायक, डॉ. राजपाल कश्यप प्रदेश अध्यक्ष समाजवादी पिछड़ा वर्ग प्रकोष्ठ, मो. शकील नदवी प्रदेश अध्यक्ष समाजवादी अल्पसंख्यक सभा, शराफत अली जिलाध्यक्ष समाजवादी पार्टी हरदोई, बृजेश कुमार वर्मा टिल्लू पूर्व प्रत्याशी मल्लावां बिलग्राम विधान सभा, यदुनंदन लाल राजपूत प्रदेश सचिव सपा, नाजिम खां राष्ट्रीय उपाध्यक्ष युवजन सभा, श्रीमती शान्ति देवी जिला पंचायत सदस्य मल्लावां, मो नसीम विधानसभा सभा अध्यक्ष मल्लावां आदि शामिल रहे।

इससे पहले 28 मई को गाजीपुर जनपद में भाजपा के कुशासन के शिकार हुए परिवार तक एक प्रतिनिधिमंडल के जरिये श्री अखिलेश यादव ने मदद भेजी। श्री अखिलेश यादव के निर्देश पर सांसद आजमगढ़ धर्मेंद्र यादव के नेतृत्व में समाजवादी पार्टी के प्रतिनिधिमंडल ने गाजीपुर जनपद के नरवर गांव पहुंचकर संतप्त परिजनों से मुलाकात कर गहरी संवेदनाएं प्रकट की।

सांसद श्री धर्मेंद्र यादव ने समाजवादी पार्टी की तरफ से स्वर्गीय छोटू यादव की धर्मपत्नी, स्वर्गीय अमन यादव के पिता श्री हीरा यादव, स्वर्गीय रविंद्र यादव एवं स्वर्गीय अजय यादव के पिताजी को डेढ़-डेढ़ लाख रुपए और घायल श्री संतोष यादव व श्री जितेंद्र यादव के परिवारीजनों को 25-25 हजार रुपए का आर्थिक सहयोग दिया।

प्रतिनिधिमंडल में सांसद अफजाल अंसारी, विधायक ओम प्रकाश सिंह, विधायक डॉ. वीरेंद्र यादव, विधायक जयकिशन साहू, विधायक सुहैब अंसारी उर्फ मन्नू अंसारी, जिलाध्यक्ष समाजवादी पार्टी गाजीपुर गोपाल सिंह यादव, पूर्व एमएलसी काशीनाथ यादव, समाजवादी लोहिया वाहिनी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अभिषेक यादव, पूर्व एमएलसी विजय यादव, विधायक सैदपुर के प्रतिनिधि श्री गोविंद यादव, पूर्व विधायक त्रिवेणी राम व पार्टी के वरिष्ठ नेतागण, संगठन के पदाधिकारी आदि शामिल रहे।

सच्चे लोकतंत्र के लिए जरूरी है समाजवाद

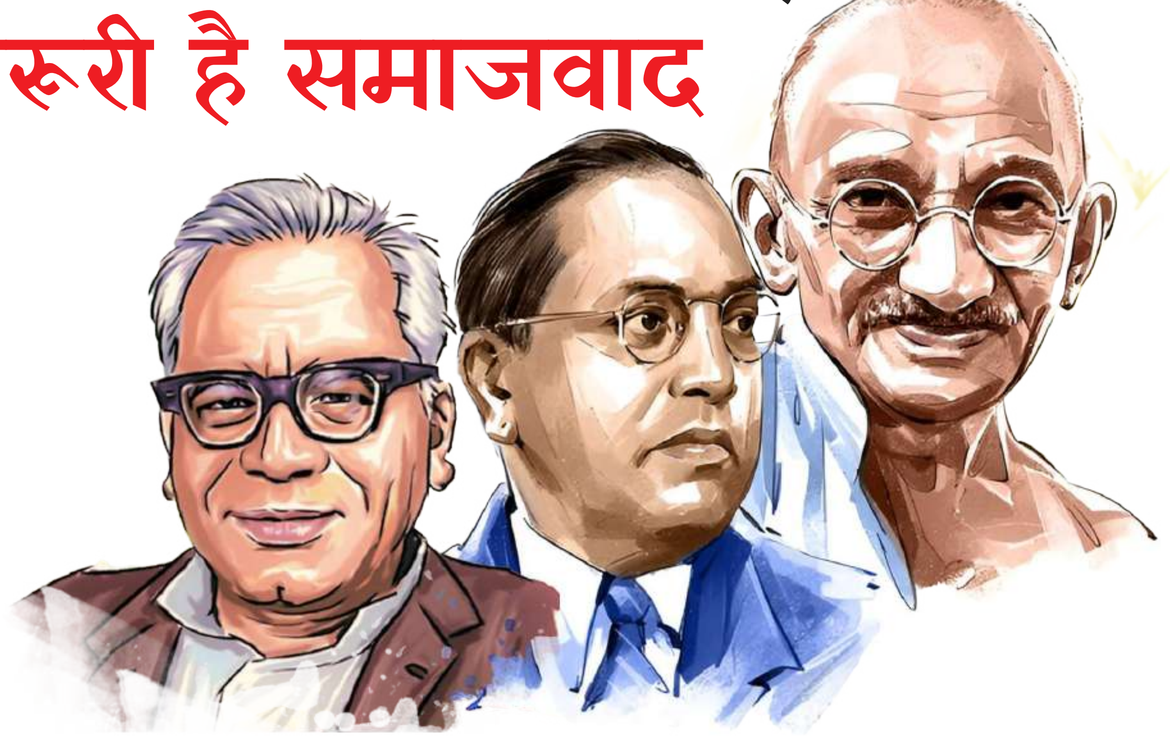

अरुण कुमार त्रिपाठी
वरिष्ठ पत्रकार

यह कहने में कोई संकोच नहीं होना चाहिए कि भारत का समाजवादी आंदोलन कार्ल मार्क्स के चिंतन और अंतरराष्ट्रीय कम्युनिस्ट आंदोलन से प्रभावित रहा है। लेकिन उसने मार्क्सवाद के क्रांति के विचार की सैद्धांतिक कमजोरियों और कम्युनिस्ट आंदोलन की साजिशों और तानाशाहियों से बाहर निकल कर महात्मा गांधी के शिल्प में समाजवाद को ढालने की कोशिश की।

डॉ राममनोहर लोहिया ने थोड़ा और आगे बढ़कर इसमें डॉ भीमराव अंबेडकर के जाति विनाश के शिल्प को भी शामिल करने की कोशिश की। समाजवादी चिंतकों में आचार्य नरेंद्र देव महात्मा गांधी के राष्ट्रीय आंदोलन के नेतृत्व और महत्त्व को स्वीकार करते हुए मार्क्सवाद की आवश्यकता पर डटे रहे तो जयप्रकाश नारायण जहां गांधी के सर्वोदय के सिद्धांत की ओर गए वहीं डॉ लोहिया अपनी सप्त क्रांति और चौखंभा राज्य के माध्यम से वैश्विक लोकतंत्र का नया शास्त्र गढ़ते रहे।

अगर भारत के तीन प्रमुख समाजवादी चिंतकों और राजनेताओं के विचारों का सार प्रस्तुत करना हो तो यही कहा जा सकता है कि वे समाजवाद के अंतरराष्ट्रीय सिद्धांत और संरचना को भारत की दृष्टि से एक नया आकार देने में लगे थे। यह एक श्रेष्ठ लोकतंत्र का आकार है जिसमें समाजवाद समाहित है। इन चिंतकों ने अपने चिंतन और जीवन से यह सिद्ध कर दिया था कि जिस तरह से पूंजीवाद और साम्राज्यवाद का चोली दामन का साथ है वैसे ही समाजवाद और लोकतंत्र एक दूसरे के जुड़वा भाई-बहन हैं।

सच्चा लोकतंत्र समाजवाद के बिना कायम नहीं हो सकता और सच्चा समाजवाद लोकतंत्र के बिना पंगु है। रोजा लक्जमबर्ग के शब्दों में समाजवाद केवल रोटी की

समस्या नहीं है प्रत्युत एक विश्वव्यापी सांस्कृतिक आंदोलन है। अधिनायकतंत्र आतंक पैदा करता है और मनुष्य को राज्य की मशीन का एक पुर्जा मात्र बना देता है। वह मनुष्य के गौरव को नष्ट कर देता है और व्यक्तित्व के विकास का अवसर नहीं देता। यह एक नए ढंग के आतंक और दासता को जन्म देता है जिसमें नागरिक की कोई इच्छा नहीं होती और राज्य का एक पुर्जा मात्र होता है। अवश्य ही समाजवाद जो कि सामान्यजन की स्वतंत्रता का हामी है सरकार के इस स्वरूप की स्वीकृति नहीं दे सकता।

बल्कि आचार्य नरेंद्र देव इस बात पर आश्चर्य जताते हैं कि द्वितीय महायुद्ध जो कि राजनीतिक प्रजातंत्र और फासीवाद के बीच लड़ा गया उसकी समाप्ति के बाद कम्युनिस्ट पार्टियां और उनकी प्रणाली अधिनायकवादी तंत्र के माध्यम से जनता के जीवन पर पूर्ण नियंत्रण रखना चाहते हैं। इसीलिए वे इस व्याख्यान में इस नतीजे पर पहुंचते हैं कि वास्तव में रूसी नेताओं को राजनीतिक लोकतंत्र से कोई प्रेम नहीं था।

हालांकि आचार्य नरेंद्र कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी को राजनीतिक दिशा देने के मामले में रूस की बोल्शेविक क्रांति के नेता लेनिन का उल्लेख करते हैं। भारतीय समाजवादियों की सबसे बड़ी विशेषता यह है उन्होंने निजी संपत्ति के परित्याग को एक महान गुण के रूप में स्वीकार किया है। इसे वे मार्क्स के विचार का केंद्रीय तत्व मानते हैं। इसे वे गांधी के विचार का केंद्रीय तत्व मानते हैं। इसी विचार को डॉ भीमराव अंबेडकर बुद्ध के विचार का केंद्रीय तत्व मानते हैं। बस असली सवाल यही है कि इस निजी संपत्ति का परित्याग कैसे किया जाए। इसे हिंसा के माध्यम से छीन लिया जाए, इसे राज्य की शक्ति के बल पर ले लिया जाए या इसे सहज मानस परिवर्तन के आधार पर परित्याग करवाया जाए।

सच्चा लोकतंत्र समाजवाद के बिना कायम नहीं हो सकता और सच्चा समाजवाद लोकतंत्र के बिना पंगु है। रोजा लक्जमबर्ग के शब्दों में समाजवाद केवल रोटी की समस्या नहीं है प्रत्युत एक विश्वव्यापी सांस्कृतिक आंदोलन है

निजी संपत्ति के इसी परित्याग के लिए जहां आचार्य नरेंद्र देव पूरी तरह अहिंसा के सिद्धांत में यकीन नहीं करते और महात्मा गांधी के एक सवाल के जवाब में कहते भी हैं कि इसके लिए एक हद तक बल प्रयोग आवश्यक हो जाएगा। डॉ राम मनोहर लोहिया गांधी के सत्याग्रह पर बल देते हैं और गांधी के ट्रस्टीशिप के विचार की ओर संकेत करते हैं तो जयप्रकाश नारायण अहिंसक वर्ग संघर्ष की बात करते हैं।

इसी लक्ष्य की प्राप्ति के लिए डॉ अंबेडकर बुद्ध के धार्मिक दर्शन को राजनीतिक दर्शन में परिवर्तित करना चाहते हैं। वे दावा भी करते हैं कि जो विचार कार्ल मार्क्स ने उन्नीसवीं सदी में व्यक्त किया और उसकी प्राप्ति के लिए बल प्रयोग को अनिवार्य बताया उसे बुद्ध ने 2500 साल पहले अहिंसक तरीके से प्राप्त किया था।

आमतौर पर मार्क्स के विरोधी समझे जाने वाले डॉ लोहिया वास्तव में कम्युनिस्ट पार्टियों की रणनीतियों के आलोचक हैं। वे मार्क्स के समीक्षक हैं। उनके विचारों की कमियों की ओर संकेत करते हैं और इशारा करते हैं कम्युनिस्ट पार्टियों के झूठ, हिंसा, साजिश और छल कपट की ओर। गांधी के युग में जीने वाले डॉ लोहिया इस बात को स्वीकार नहीं कर पाते कि झूठ के माध्यम भला कैसे अच्छे समाज का निर्माण किया जा सकता है।

लेकिन मार्क्स की प्रशंसा में कहे गए लोहिया के शब्दों की अनदेखी नहीं की जा सकती। वे कहते हैं:---

“मैं यहां बता देना चाहता हूं कि मार्क्स की किस बात ने मुझे आकर्षित किया है। युवावस्था में उसकी कुछ बातों पर मैं मोहित रहा हूंगा लेकिन आज जिस एक चीज ने मुझे मोहित किया है वह है संपत्ति के मोह का त्याग। जिस किसी ने इस विचारधारा का ठीक से अध्ययन किया और इसे ठीक से अपनाया उसके मन से संपत्ति का मोह दूर होगा। यह एक बहुत आकर्षक पहलू है जो धार्मिक व्यक्ति को भी आकर्षित करता है। इसे अपरिग्रह या वैराग्य के क्षेत्र का अभ्यास भी कह जा सकता है। संभव है मार्क्सवाद में गहरी आस्था रखने वाला व्यक्ति अन्य क्षेत्रों में शैतान हो, वह धोखेबाज हो सकता है, वह झूठ बोल सकता है, हत्या भी कर सकता है, फूहड़ आचरण वाला ही हो सकता है, पाखंडी हो सकता है। लेकिन निजी संपत्ति का मोह उसमें नहीं होगा। मार्क्सवाद ने हमें धन से नफरत करना सिखाया। खासकर उससे जो दूसरों को नौकर बनाए। मैं इतिहास की

फाइल फोटो

पृष्ठभूमि में इसे सबसे बड़ी उपलब्धि कहूंगा क्योंकि उसने आदमी को बिना किसी आत्मानुशासन या मनःस्थिति की साधना के संपत्ति के मोह से मुक्त कर दिया। मार्क्सवाद नचिकेता है जो सहज भाव से स्वर्ण का तिरस्कार करता है।"

यहीं पर डॉ लोहिया गांधी के शिल्प में समाजवाद को ढालने की कोशिश करते हैं। उनका मानना है कि ऋषि पर्यावरण पर अधिक जोर देता है जबकि संत व्यक्ति पर। वे कहते हैं:—संभव है गांधी ने व्यक्ति पर अधिक जोर दिया और पर्यावरण पर कम जोर दिया। लेकिन यह भी समझ लेना चाहिए कि समाजवाद ने पर्यावरण पर अधिक जोर दिया है और व्यक्ति पर जरूरत से कम। यदि विचार की तर्कप्रणाली बनानी हो तो दोनों पर समान रूप से जोर देना होगा। क्योंकि आदमी साधन भी है और साध्य भी। आदमी अगर शास्वत गुणों का प्रतिपादन करता है तो उसे परिवर्तन का औजार भी बनना चाहिए। निष्कर्ष के रूप में कहूंगा कि आज ऋषि और संत को एक करने की आवश्यकता है।

डॉ लोहिया के चिंतन की विशेषता यह है कि वे गांधी के विशिष्ट चिंतन प्रणाली को विश्व के लिए उतना कारगर नहीं मानते जितना कि समाजवाद को। लेकिन गांधी के सत्याग्रह और सिविल नाफरमानी के अद्वितीय हथियार रूपी चाक और डंडे से समाजवाद का नया रूप गढ़ना चाहते हैं।

समाजवादी आंदोलन और उसके भारतीय पुरोधा अगर निजी संपत्ति के त्याग पर जोर देते रहे तो वे हमेशा इस बात के लिए भी सतर्क रहे कि लोकतंत्र की आत्मा यानी नागरिक अधिकारों की हिफाजत हर हाल में की जानी चाहिए। अगर जयप्रकाश नारायण ने अप्रैल 1974 में सिटीजन फार डेमोक्रेसी का गठन किया तो 1976 में पीपुल्स यूनियन फार सिविल लिबरटीज एंड डेमोक्रेटिक (PUCLDR) का गठन किया। जेपी के निधन के बाद यह संगठन बिखर गया और 1980 में इस संगठन का नाम पीयूसीएल कर दिया गया।

अगर जेपी ने स्वतंत्र भारत में नागरिक अधिकारों की हिफाजत के लिए संगठन बनाया तो डॉ राममनोहर लोहिया ने पंडित जवाहर लाल नेहरू की प्रेरणा से ब्रिटिश शासन में इंडियन यूनियन फार सिविल लिबरटीज नामक संगठन बनाया। उन्हीं की प्रेरणा से डॉ लोहिया ने नागरिक स्वतंत्रता नामक पुस्तिका भी लिखी। उस समय वे कांग्रेस के विदेश विभाग के सचिव थे। इसकी भूमिका नेहरू जी ने लिखी थी। मूलतः अंग्रेजी में लिखी गई इस पुस्तिका का शीर्षक था-द स्ट्रगल फार सिविल लिबरटीज।

फ्रांसीसी क्रांति से प्रेरित इस पुस्तिका में कहा गया है कि राज्य का दायित्व मनुष्य के प्राकृतिक अधिकारों की हिफाजत करना है। इसमें व्यक्तिगत सुरक्षा का अधिकार, संपत्ति का अधिकार और दमन और अत्याचार के प्रतिकार का अधिकार शामिल है। पुस्तिका में अभिव्यक्ति के अधिकार संबंधी एक अमेरिकी उक्ति का हवाला दिया गया है:—

अगर आदमी विद्रोह की प्रकट कार्रवाई न

करे तो क्रांतिकारी से क्रांतिकारी अभिमत व्यक्त करने पर कोई सजा नहीं दी जा सकती। इसी तरह सभा जुलूसों के बारे में एक ब्रिटिश सिद्धांत सर्वमान्य है कि अगर ट्रैफिक में बहुत अधिक बाधा न पड़े तो पुलिस या प्रशासकीय अधिकारी सभा और जुलूस को रोकने की कार्रवाई नहीं कर सकते। इन सिद्धांतों का मतलब राजद्रोह के कानूनों का खात्मा और प्रेस पुस्तकों, चिट्ठियों और रेडियो का सेंसरशिप का न होना है।

अंत में डॉ लोहिया इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि "नागरिक स्वतंत्रता की रक्षा के लिए सभी प्रकार की खाइयां खोदनी चाहिए और किले बनाने चाहिए। नागरिक स्वतंत्रता के लिए किया जाने वाला आंदोलन ही एक खाई और किला है। हो सकता है कि आंदोलन से सिर्फ जनमत ही मजबूत हो लेकिन यह भी संभव है कि राज्य को झुकना पड़े।"

यह पुस्तिका 1976 में जब फिर से प्रकाशित हुई तो इसकी भूमिका कालापानी की सजा पाए और समाजवादी विचारों से प्रेरित दिनेश दास गुप्ता ने लिखी। उन्होंने अपनी भूमिका में फिर से यह स्पष्ट कर दिया कि समाजवाद और लोकतंत्र किस प्रकार एक दूसरे से अभिन्न हैं।

जेपी का समाजवाद और लोकतंत्र

1974 के जिस महान आंदोलन से आजकल कुछ निहित स्वार्थ के बौद्धिक बेचैन हैं और जिसे बदनाम करने के लिए जेपी को बुरा भला कह रहे हैं वे उसके सैद्धांतिक पक्ष में झांकने के लिए तैयार नहीं हैं। वे उस लोकतांत्रिक आंदोलन से कमजोर हुई कांग्रेस के प्रति इतने मोहग्रस्त हैं कि आपातकाल तक को सही साबित करने में लग गए हैं। सवाल उठता है कि अगर इंदिरा गांधी का आपातकाल सही था तो आज नरेंद्र मोदी का अघोषित आपातकाल क्यों बुरा है। अगर सारी लोकतांत्रिक संस्थाओं को कार्यपालिका के अधीन ही काम करना चाहिए और नागरिकों को डंडे के जोर से हांका जाना चाहिए तो फिर मौजूदा सरकार तो आदर्श है। आज जिन्हें भी लोकतंत्र के सिकुड़ते दायरे को विस्तार देने की जरूरत महसूस होती है उन सभी की निगाह 1974 के जेपी आंदोलन की ओर जाती है। न कि इंदिरा गांधी की तानाशाही की ओर।

जेपी ने अहिंसक वर्ग संघर्ष का समर्थन किया था। जेपी किसी भी प्रकार से हिंसा के समर्थक नहीं थे। उनका कहना था कि जो भी क्रांतियां हिंसा के माध्यम से होती हैं वे अपने लक्ष्य को हासिल नहीं करतीं। उन पर हिंसा करने वाला एक खास समूह हावी हो जाता है और वह महान लक्ष्यों को दरकिनार कर देता है। इसीलिए उनका कहना था कि समाजवाद तीन प्रकार के होते हैः—

डॉ लोहिया के चिंतन की विशेषता यह है कि वे गांधी के विशिष्ट चिंतन प्रणाली को विश्व के लिए उतना कारगर नहीं मानते जितना कि समाजवाद को मानते

एक वह जो हिंसा के माध्यम से आए। उसे तामसी समाजवाद कहते हैं। दूसरा वह जो राज्य के माध्यम से आए उसे राजसी समाजवाद कहते हैं। तीसरा वह जो जनशक्ति के माध्यम से आए, उसे सात्विक समाजवाद कहते हैं। वे सात्विक समाजवाद के हिमायती थे। यहां जेपी भी समाजवाद को गांधी के शिल्प में ढाल रहे थे। गांधी की तरह उनका यकीन हो चला था कि राज्य की शक्ति को कम किए बिना न तो सच्चा लोकतंत्र कायम हो सकता है और न ही सच्चा समाजवाद।

जो लोग जेपी की व्याख्या करते हुए यह कहते हैं कि जेपी राज्य की शक्ति और जनता की शक्ति में संतुलन कायम करना चाहते हैं वे न तो जेपी और गांधी को समझते हैं और न ही संपूर्ण क्रांति और सर्वोदय के विचार को। जेपी वास्तव में सच्ची जनशक्ति को जगाकर राज्य की शक्ति को क्षीण करना चाहते। उनके लिए वही सच्चा समाजवाद था वही सच्चा लोकतंत्र था और वही सर्वोदय था और वही संपूर्ण क्रांति थी। क्योंकि जेपी गांधी की तरह मान चुके थे कि राज्य की शक्ति हिंसक है और उसे तभी अहिंसक बनाया जा सकता है जब जनशक्ति बलशाली हो।

यह कहना किसी भी तरह से अतिश्योक्ति नहीं है कि समाजवादियों ने गांधी से सहमत असहमत होते हुए, गांधी विचार को नई प्रणाली में ढालने की कोशिश करते हुए दरअसल समाजवाद के विचार को गांधी के शिल्प में ढाल दिया। इसलिए भारत के समाजवादी आंदोलन ने समाजवाद को सत्य, अहिंसा, समता, स्वतंत्रता, बंधुत्व और न्याय जैसे मूल्यों से अनुप्राणित किया जो कि वह विश्व इतिहास में उनका अद्वितीय योगदान है।

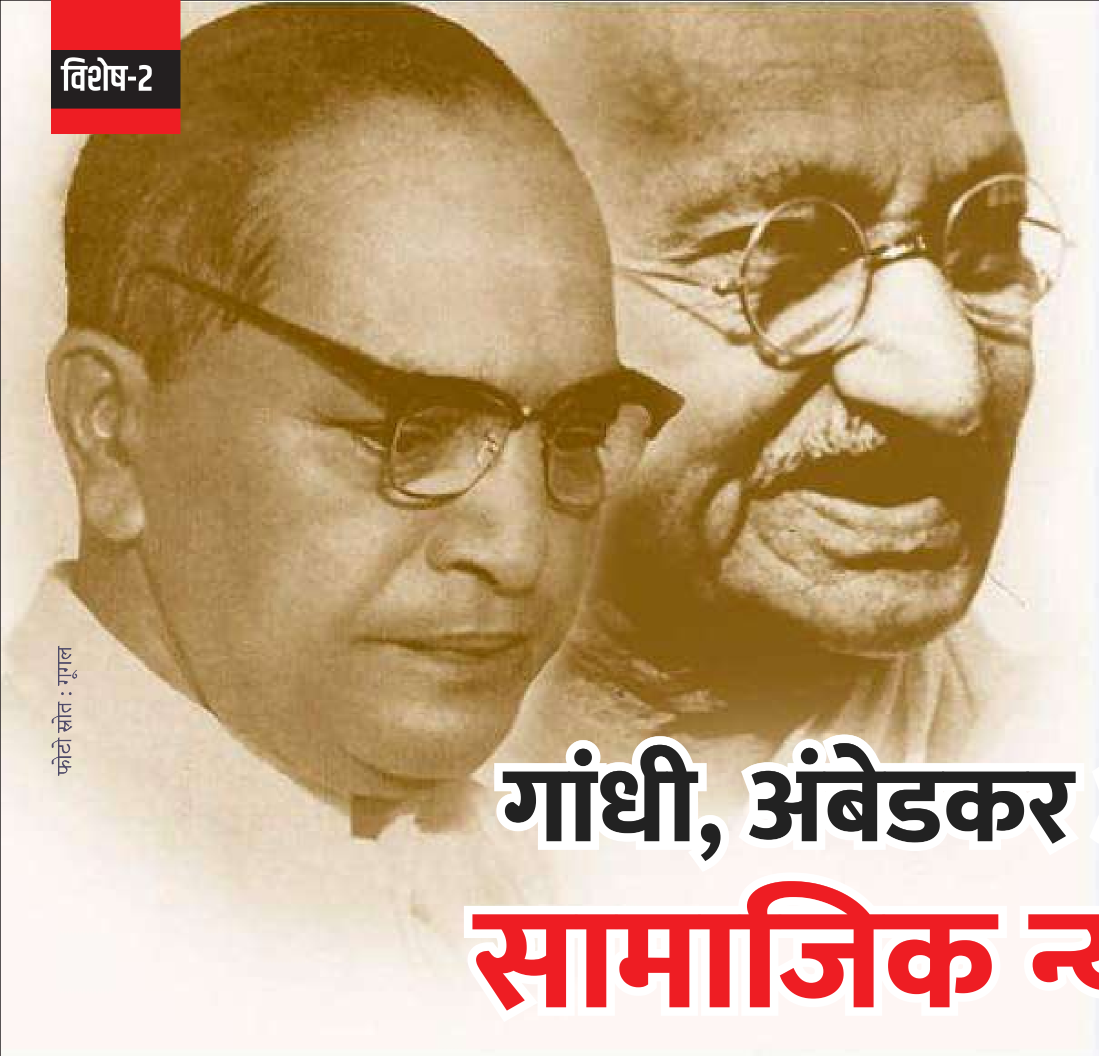

फोटो स्रोत : गूगल

गांधी, अंबेडकर और सामाजिक न्याय

जयशंकर पाण्डेय

देश की आजादी के इस तथाकथित अमृत काल के अवसर पर गांधी और अंबेडकर के बीच चले लंबे विवाद की अंतरवस्तु समझना बहुत जरूरी है। उस विवाद से आजादी का न्या अर्थ निकलता है और सामाजिक न्याय का सिद्धांत साकार होता है।

इस विवाद को समझने और उस पर चर्चा करने के दो नजरिये हैं। एक नजरिया और उद्देश्य यह है कि विवाद को बढ़ाते रहिए और दोनों को लड़ाकर समाज को बांटने और आजादी के महान मूल्यों को कमजोर करने का माहौल पैदा करते रहिए।

कुछ लोग अंबेडकर के डंडे से गांधी को पीटते हैं तो दूसरे लोग गांधी की लाठी से अंबेडकर को पीटते हैं। वे सोचते हैं कि वे भारत और उसके समाज का भला कर रहे हैं जबकि इससे दोनों कमजोर होते हैं और कमजोर होता है भारतीय समाज का नैतिक बल और समता मूलक विचार।

निश्चित तौर पर दोनों के बीच मतभेद थे और उसमें गंभीर टकराव भी थे लेकिन वे दोनों समाज को अपने-अपने नजरिये से बेहतर बनाना चाहते थे इसलिये जिन्हें भी भारतीय समाज को बेहतर और श्रेष्ठ बनाना है उन्हें सोचना होगा कि उनके मतभेद और टकराव के इतने साल बाद उसे किस तरह से देखा जाए।

दूसरा नजरिया दोनों के मतभेदों को समझते हुए यह तय करने का है कि किस तरह से उनका समन्वय किया जाए और समाज और नया देश बनाया जाए, जो लोग आजादी को भीख में मिली हुई बताते हैं या 99 साल की लीज पर आई हुई बताते हैं वे न तो गांधी के महत्व को समझ सकते हैं और न ही अंबेडकर के।

गांधी आजादी की लड़ाई लड़ रहे थे और उनका सर्वाधिक जोर आजादी पाने पर था लेकिन कांग्रेस पार्टी और देश के अन्य संगठनों के बड़े नेताओं में महात्मा गांधी ऐसे

नेता थे, जिन्हें इस बात का एहसास था कि छुआछुत भारतीय समाज की गंभीर समस्या है और हमें इसका समाधान करना ही होगा लेकिन इसी के साथ वे सांप्रदायिकता को भी बड़ी समस्या मानते थे।

इसलिये दूसरे नंबर पर उनका जोर सांप्रदायिकता के जहर को कम करने और छुआछूत को मिटाने पर रहता था जबकि डा अंबेडकर का मानना था कि भारतीय समाज की जाति व्यवस्था इस समाज की तमाम कमजोरियों की जड़ में है। वास्तव में अगर भारत गुलाम हुआ तो उसके पीछे जाति के ढ़ांचे का बड़ा योगदान था। इसलिये जाति को मिटाए बिना भारतीय समाज शक्तिशाली होकर खड़ा नहीं हो पाएगा। यह कहना कि वर्णाश्रम व्यवस्था ठीक थी, गलत धारणा है। गांधी कहते थे कि आरंभ में वर्ण व्यवस्था अच्छी थी और कालांतर में उसमें दोष आ गया, वहीं अंबेडकर कहते थे कि वर्ण व्यवस्था आरम्भ से ही खराब थी और उसके लिए हिन्दू समाज के तमाम धर्मग्रंथ जिम्मेदार हैं।

अगर हिन्दू समाज को बचाना है तो उन तमाम धर्मग्रन्थों से पीछा छुड़ाकर कोई एक धार्मिक ग्रंथ तैयार करना होगा। हिन्दू समाज को एक मिशनरी समाज बनाना होगा और जाति व्यवस्था का अंत करना होगा।

डॉ अंबेडकर को जाति की समस्या इतनी बड़ी लगती थी कि अंग्रेजों से भारत के लिए डोमिनियन स्टेटस यानी कनाडा जैसा दर्जा चाहते थे। इसी के साथ डॉ. अंबेडकर ने अनुसूचित जाति के लिए अलग मतदाता मंडल भी चाहा था। उनका कहना था कि जब गांधी जी मुस्लिमों और सिखों के लिए वैसा मानने को तैयार हैं तो अछूतों के लिए क्यों नहीं।

इस टकराव का शिखर 1932 में येरवदा जेल में महात्मा गांधी के अनशन में दिखाई पड़ता है और इसी के परिणाम स्वरूप पूना समझौता होता है। पूना समझौते के दौरान क्या-क्या हुआ। इस बात का गांधी जी के निजी सचिव प्यारेलाल ने द इपिक फास्ट जैसी प्रसिद्ध पुस्तक में लिखी है।

राजमोहन गांधी ने लिखा है कि गांधी के उस अनशन ने डॉ. अंबेडकर को तो झुकाया ही लेकिन सवर्ण समाज पर परिवर्तन का बहुत बड़ा दबाव बनाया। उस अनशन के कारण तमाम ब्राह्मणों ने अछूतों को मन्दिर प्रवेश कराया। पृथक मतदाता मंडल में अनुसूचित जाति को जितनी सीटें मिल रही थीं गांधी ने उससे दोगुनी सीटें दिलवायीं।

अंबेडकर का मानना था कि इससे पहले भी समाज में सुधार के प्रयास हुए हैं लेकिन उन प्रयासों में आध्यात्मिक भाव है। उनकी इन बातों से गांधी जैसा संत राजनेता भी सहमत हुआ और उन्होंने अपने आध्यात्मिक और राजनीतिक दोनों प्रयासों को इस काम में लगाया। जो गांधी 1930 में चार वर्णों में यकीन करते थे वे बाद के दिनों में कहने लगे थे कि वे सिर्फ एक वर्ण में यकीन करते हैं।

डा अंबेडकर को संविधान सभा में लाने और उनकी प्रतिभा को राष्ट्र निर्माण के काम में लगाने के लिए गांधी ने पूरा जोर लगाया। कोलकाता में जब अंग्रेज लेखिका मुरियल लिस्टर ने गांधी से से पूछा कि जोगेन्द्र नाथ मंडल तो पाकिस्तान चले गए हैं अब आपका संविधान कौन बनाएगा तो गांधी ने कहा कि अंबेडकर हमारे पास हैं और संविधान वे बनाएंगे।

तमाम मतभेदों के बावजूद डॉ. अंबेडकर भी गांधी की तरह संवैधानिक और अहिंसक मार्ग पर चलने वाले राजनेता थे। यह भी एक वजह है कि जब उन्होंने हिन्दू धर्म का त्याग किया तो बौद्ध धर्म अपनाया।

निश्चित तौर पर गांधी और अंबेडकर के बीच उनके जीवन में मतभेद थे और उस इतिहास को मिटाना भारतीय सत्य और समझ का गला घोंटना होगा। गांधी अगर राजनीतिक आजादी को सबसे ऊपर रखते थे और सामाजिक स्वतंत्रता को उसके बाद तो डॉ. अंबेडकर सामाजिक आजादी को सबसे ऊपर और राजनीतिक स्वतंत्रता को बाद में रखते थे। आज भारतीय समाज और राजनीति को दोनों की दृष्टियों के समन्वय की जरूरत है।

इस काम को सबसे बेहतर तरीके से अगर किसी व्यक्ति ने करने की कोशिश की है तो वे है डॉ. राममनोहर लोहिया। उनके इस काम में आचार्य नरेन्द्र देव और जयप्रकाश नारायण का भी बड़ा योगदान है। डॉ. लोहिया जहां गांधी के लिए कहते हैं कि बीसवीं सदी के दो बड़े आविष्कार हैं एक गांधी दूसरा एटम बम। आखिर में एक ही बचेगा। दूसरी ओर वे डॉ. अंबेडकर के लिए कहते हैं कि वे गांधी के बाद भारत के सबसे महान व्यक्ति थे। उनके होने से हमें लगता था कि इस देश से एक दिन जाति व्यवस्था का अंत होगा।

डॉ. लोहिया समाजवाद के लिये गांधी और अंबेडकर दोनों का सहारा लेते हुए बढ़ना चाहते थे। वे एक तरह से दोनों के बीच सेतु का काम करते हैं क्योंकि उनके लिए आजादी की लड़ाई भी उतनी ही जरूरी थी जितनी सामाजिक न्याय की लड़ाई।

(लेखक पूर्व विधायक व समाजवादी पार्टी के प्रदेश महासचिव हैं)

सरदार सेना संग सपा ने मनाया शिवाजी का राज्याभिषेक दिवस

बुलेटिन ब्यूरो

छत्रपति शिवाजी महाराज का राज्याभिषेक दिवस 6 जून को समाजवादी पार्टी के राज्य मुख्यालय पर समारोहपूर्वक मनाया गया। यह समारोह सरदार सेना ने आयोजित किया था। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव ने इस अवसर पर छत्रपति शिवाजी महाराज के चित्र पर माल्यार्पण कर नमन किया।

समारोह के संयोजक सरदार सेना के प्रमुख श्री आरएसपटेल थे। संचालन श्री सतेन्द्र पटेल ने किया। समारोह में सरदार सेना के वक्ताओं ने एक स्वर में कहा कि 2027 में प्रदेश में समाजवादी पार्टी की सरकार बनेगी और श्री अखिलेश यादव ही मुख्यमंत्री होंगे। समारोह को बतौर मुख्य अतिथि संबोधित करते हुए समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव ने कहा कि

भाजपा सरकारें झूठ पर टिकी हैं। उसका मातृ संगठन नागपुर का बिना रजिस्ट्रेशन का कारखाना है। वह समाज में नफरत और दूरी का उत्पादन करता है। कुप्रचार में उसने हिटलर के कुख्यात प्रचार मंत्री जोसेफ गोएबल्स को भी बहुत पीछे छोड़ दिया है। भाजपा के कारनामों से समाज का हर वर्ग परेशान और दुःखी है। सन् 2027 में उत्तर प्रदेश से भाजपा की विदाई अब सुनिश्चित है।

श्री अखिलेश यादव ने कहा कि छत्रपति शिवाजी महाराज ने बिना भेदभाव, मानवता के रास्ते पर, पंथनिरपेक्षता को अपनाते हुए, सबको साथ लेकर अपना साम्राज्य बनाया।

उनके सम्मान में आगरा में भव्य म्यूजियम बनाया जाएगा। लखनऊ में रिवरफ्रंट पर उनकी सिंहासन पर बैठी प्रतिमा स्थापित होगी। सिंहासन सोने का होगा।

श्री अखिलेश यादव ने कहा कि जो इतिहास अच्छा रास्ता न दिखा सके, जो इतिहास दूरी पैदा करता है, उसे इतिहास ही रहने देना चाहिए। हमारे लिए सभी महापुरुष सम्मानीय हैं, आदरणीय हैं। उन्होंने कहा कि छत्रपति शिवाजी महाराज पंथनिरपेक्ष थे। उनके सेनापति नूर खां बेग थे, तोपाखाना का संचालन इब्राहिम खां और दौलत खां करते थे। सबको साथ लेकर ही उन्होंने स्वराज की लड़ाई लड़ी थी।

श्री यादव ने कहा कि भाजपा सरकार में लूट और भ्रष्टाचार चरम पर है। गरीबों के पैसों की भयंकर लूट हो रही है। जनता बुरी तरह त्रस्त है। ऐसे में पीडीए ही भाजपा का मुकाबला करने में सक्षम है। लंबी और बड़ी लड़ाई सामने है। उत्तर प्रदेश से ही देश में परिवर्तन होगा। लोग 2027 में भाजपा को सत्ता से बेदखल करने का संकल्प ले चुके हैं।

समारोह में सर्वश्री किरनमय नंदा राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, राजेन्द्र चौधरी राष्ट्रीय सचिव, श्याम लाल पाल प्रदेश अध्यक्ष, प्रो बी. पाण्डेय राष्ट्रीय अध्यक्ष शिक्षक सभा, कामाजी पंवार, डॉ आशुतोष वर्मा प्रवक्ता, रोशन लाल विधायक, सोनम बगवाड़ी तीर्थ पुरोहित सहित शेख सुभान अली, अविनाश कांकड़े आदि की उपस्थिति उल्लेखनीय रही।

असम में लहराया सपा का झंडा

बुलेटिन ब्यूरो

उत्तर प्रदेश के बाद देश के विभिन्न राज्यों में तेजी से लोकप्रिय हो रहे श्री अखिलेश यादव और समाजवादी पार्टी ने गुजरात पंचायत चुनाव के बाद असम में भी अपना परचम लहराया है। असम राज्य में निकाय चुनावों में समाजवादी पार्टी की जीत बताती है कि श्री अखिलेश यादव की बेहतर छवि, सौम्यता और नेतृत्व क्षमता का देश कायल हुआ है।

14 मई को असम में पंचायत चुनाव के नतीजे घोषित हुए तो असम समाजवादी पार्टी ने बीजेपी, असम गण परिषद, यूडीएफ, कांग्रेस और राइजिंग दल को पीछे छोड़ते हुए आठ वार्ड मेम्बर की सीटों पर कब्जा किया। दो ज़िला परिषद और आठ आंशुलिक पंचायत की सीटों पर मामूली अंतर से बीजेपी और असमगण परिषद के गठबंधन से नज़दीकी मुक़ाबले में दूसरे स्थान पर रही।

राष्ट्रीय सचिव प्रो भुवन जोशी ने इसका श्रेय राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव के पीडीए के विजन और सांसद श्रीमती डिंपल यादव के असम के प्रति उनके विशेष स्नेह की जीत बताया है।

उन्होंने कहा कि समाजवादी पार्टी को अब असम की जनता एक नए विकल्प के रूप में मान रही है। असम की जनता ने जो समर्थन दिया है उसके लिए उनका आभार प्रकट किया। असम के प्रदेश अध्यक्ष श्री ब्रोजन कुमार हैंडिक ने श्री अखिलेश यादव और सांसद श्रीमती डिंपल यादव का आभार प्रकट किया है।

गौरतलब है कि इससे पहले महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव, गुजरात के निकाय चुनावों में भी समाजवादी पार्टी का परचम लहराया था और अब समाजवादी पार्टी दूसरे राज्यों में भी तेजी से विस्तार कर रही है।

उपेक्षितों के लिए प्रकाश है शिक्षा -अखिलेश

बुलेटिन ब्यूरो

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव ने कहा है कि शिक्षा समाज को जोड़ती है। उपेक्षितों के लिए शिक्षा प्रकाश है। शिक्षा से जागरुकता आती है। जीवनी शिक्षा से जुड़ी होती है।

पूर्व एमएलसी श्रीमती कांति सिंह की जीवनी 'छूना है आसमान' पुस्तक का 9 जून को विमोचन करने के बाद समारोह को संबोधित करते हुए समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव ने श्रीमती कांति सिंह को बधाई देते हुए कहा कि इस पुस्तक में उनके पूरे जीवन का संघर्ष है। वह रूढ़िवादी समाज से लड़ते हुए यहां तक पहुंची हैं।

श्री यादव ने कहा कि आसमान छूने के लिए जीवन भर संघर्ष करते रहना पड़ता है। शिक्षा शोषण नहीं पोषण करती है। शिक्षा पाजिटिव और प्रोग्रेसिव बनाती है लेकिन रूढ़िवादी लोग शिक्षा के खिलाफ रहते हैं और शिक्षा पर नियंत्रण करना चाहते हैं। जो शिक्षा का सम्मान नहीं करते हैं वे दंभी, अहंकारी और घमंडी होते हैं।

कार्यक्रम का आयोजन प्रतापगढ़ से सांसद एसपी सिंह पटेल ने किया था। समारोह में श्री अखिलेश यादव ने श्रीमती कांति सिंह को समाज सेविका और शिक्षाविद् श्रीमती सावित्री बाई फुले की प्रतिमा भेंट की।

समारोह में प्रतापगढ़ के सांसद एसपी सिंह पटेल ने कहा कि श्री अखिलेश यादव प्रोग्रेसिव लीडर हैं। श्री यादव देश के अकेले नेता हैं जिनका विजन विकास है।

पूर्व एमएलसी श्रीमती कांति सिंह ने आभार प्रकट करते हुए कहा कि श्री अखिलेश यादव बेहद संवेदनशील नेता हैं। उन्होंने पीडीए के जरिए सामाजिक न्याय का आह्वान किया है। पीडीए की एकजुटता से वंचित और शोषित समाज में न्याय मिलेगा।

सपा को मजबूत करने में छोटे सिंह यादव का बड़ा योगदान

बुलेटिन ब्यूरो

कन्नौज के पूर्व सांसद श्री छोटे सिंह यादव का 13 जून को लखनऊ के मेदांता अस्पताल में इलाज के दौरान निधन हो गया। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव ने पूर्व सांसद के निधन पर गहरा दु:ख जताया।

सपा मुखिया ने 14 जून को फर्रूखाबाद स्थित श्री छोटे सिंह यादव के आवास पर पहुंच कर पार्थिव शरीर पर श्रद्धांजलि अर्पित की और उनके परिवारीजनों से मिलकर संवेदना प्रकट की।

श्री अखिलेश यादव ने कहा कि श्री छोटे सिंह यादव समाजवादी पार्टी के संस्थापक सदस्य थे। उनका और नेताजी का वर्षों का साथ था जोकि राजनीतिक संबंधों से आगे का था। वह नेताजी के पुराने साथी और परिवार की तरह थे। समाजवादी पार्टी को बनाने से लेकर ऊंचाई तक पहुंचाने में श्री छोटे सिंह यादव ने नेताजी के साथ संघर्ष किया। उन्होंने मेहनत कर समाजवादी पार्टी को मजबूत किया। पूरी जिम्मेदारी के साथ पार्टी का साथ निभाया। पार्टी के लोग उनके निधन से दु:खी हैं। हम सबकी जिम्मेदारी है कि जो रास्ता श्री छोटे सिंह यादव ने दिखाया और जो सिद्धांत दिया उसे और मजबूत करें।

श्री अखिलेश यादव ने कहा कि श्री छोटे सिंह यादव सहकारिता आंदोलन से जुड़े थे। हम सभी को सहकारिता आंदोलन को और मजबूत बनाना है जिससे गांव के लोगों को इसका लाभ मिले।

वीरांगना अहिल्याबाई

प्रेम, समर्पण व करुणा की मूर्ति

बुलेटिन ब्यूरो

लोकमाता अहिल्याबाई की 300वीं जयंती पर 31 मई को समाजवादी पार्टी के राज्य मुख्यालय लखनऊ समेत उत्तर प्रदेश के सभी जिला कार्यालयों पर उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

राजधानी लखनऊ में समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव की ओर से सांसद श्री आरके चौधरी एवं राष्ट्रीय सचिव राजेन्द्र चौधरी ने देवी अहिल्याबाई के चित्र पर माल्यार्पण कर नमन किया।

श्री अखिलेश यादव ने वक्तव्य में कहा कि भगवान शिव की अनन्य भक्त, प्रेम, समर्पण और करुणा की मूर्ति महान वीरांगना रानी अहिल्याबाई होल्कर जी की जयंती पर शत-शत नमन है। रानी अहिल्याबाई का शासनकाल मालवा का स्वर्णकाल माना जाता है। उनका पूरा जीवन समाज और राष्ट्र के लिए समर्पित रहा। प्रशासनिक कौशल, न्यायप्रियता और दूरदृष्टि के चलते उनके कार्यकाल में होल्कर राज्य ने चहुंमुखी उन्नति की।

श्री अखिलेश यादव ने कहा कि रानी अहिल्याबाई होल्कर ने सुशासन व्यवस्था के साथ सुरक्षित समृद्ध राज्य का एक आदर्श भी प्रस्तुत किया। वे कुशल सैन्य संचालक थीं। शांति व्यवस्था के नए उपक्रम के साथ उन्होंने कृषि, उद्योग और व्यापार की नई योजनाएं शुरू कीं। महिलाओं को संपत्ति में अधिकार, विधवा को दत्तक पुत्र लेने का अधिकार तथा विधवा विवाह को मान्यता दी। पर्यावरण संरक्षण के साथ 130 विभिन्न तीर्थ स्थलों और पवित्र नदियों के घाटों पर निर्माण कार्य कराया। उन्होंने राजधानी महेश्वर को शिल्प, कला, संस्कृति, शिक्षा, साहित्य का केन्द्र बनाया।

पूर्व सांसद अरविन्द कुमार सिंह, समाजवादी महिला सभा की राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती जूही सिंह और श्री कृष्ण कन्हैया पाल राष्ट्रीय अध्यक्ष अधिवक्ता सभा ने भी लोकमाता के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित कर नमन किया।

चौधरी साहब के विचार समाज को प्रेरणा देते रहेंगे

किसानों के मसीहा भारतरत्न पूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह की 38वीं पुण्यतिथि पर 29 मई को समाजवादी पार्टी के राज्य मुख्यालय लखनऊ समेत प्रदेश के सभी जिला कार्यालयों पर उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

समाजवादी पार्टी के प्रदेश मुख्यालय लखनऊ में समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव की ओर से राष्ट्रीय सचिव राजेन्द्र चौधरी ने पूर्व प्रधानमंत्री श्री चौधरी चरण सिंह के चित्र पर माल्यार्पण कर उन्हें नमन किया।

श्री अखिलेश यादव ने अपनी भावांजलि में कहा कि चौधरी साहब ने संपूर्ण जीवन भारतीयता और ग्रामीण परिवेश में जिया। उनका विचार था कि भारत की प्रगति ग्रामीण विकास से ही संभव हो सकती है। उनका मानना था कि राष्ट्र की संपन्नता के लिए ग्रामीण क्षेत्र की क्रय शक्ति अधिक होने के साथ ग्रामीण क्षेत्र का उन्नयन आवश्यक है। उनके विचार समाज को सदैव प्रेरणा देते रहेंगे।

श्री अखिलेश यादव ने कहा कि चौधरी साहब मानते थे कि कृषि क्षेत्र पर औद्योगीकरण को वरीयता देना उचित नहीं होगा। उन्होंने उत्तर प्रदेश में सामंती व्यवस्था की समाप्ति के लिए पुरजोर प्रयास किए थे।

श्री अखिलेश यादव ने कहा कि अन्नदाता की कोई सुनवाई नहीं हो रही है।

अमर रहेगा भगवान बिरसा मुंडा का नाम

आदिवासी समाज के महानायक और स्वतंत्रता संग्राम सेनानी भगवान बिरसामुंडा की 125वीं पुण्यतिथि पर 9 जून को समाजवादी पार्टी के प्रदेश मुख्यालय लखनऊ में श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उन्हें नमन किया गया। समाजवादी पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष श्याम लाल पाल ने भगवान बिरसामुंडा के चित्र पर माल्यार्पण कर भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव ने अपने वक्तव्य में कहा कि 19वीं शताब्दी में जब अंग्रेज आदिवासियों की जंगल, जमीन एवं प्राकृतिक संपदा छीन रहे थे तब आदिवासी अस्मिता एवं स्वायतत्ता के लिए बिरसा मुंडा ने संघर्ष किया। यही कारण है कि वह भगवान माने जाने लगे।

श्री अखिलेश यादव ने कहा कि भगवान बिरसा मुंडा का नाम आदिवासी विद्रोह में प्रथम पंक्ति में आएगा। 25 साल की छोटी

जिंदगी में उन्होंने कठिन संघर्ष किया और वे लोकनायक के रूप में पूजे जाने लगे। उनका बलिदान उन्हें अमर कर गया।

श्रद्धांजलि कार्यक्रम में सर्वश्री नागेन्द्र सिंह यादव विधायक, व्यासजी गौड़ राष्ट्रीय अध्यक्ष समाजवादी एससी एसटी प्रकोष्ठ, अविनाश कुशवाहा पूर्व विधायक, देवेन्द्र यादव जिलाध्यक्ष, सुनील यादव अर्चना रावत, संजय सिंह, सरोज यादव आदि प्रमुख नेता भी शामिल रहे।

साफ़ और बेबाक

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh
Socialist Leader of India. Chief Minister of UP (2012 - 2017)

Akhilesh Yadav @yadavakhil... · 1d
दे रहा है 'पूरा चाँद' ये गवाही,
क्या होगी भविष्य की परछाई!

शुक्रिया 'आजतक'!

Akhilesh Yadav @yadavakhilesh

मतलब जब आयेगी यूपी में पीडीए सरकार, तब ही होगी जातीय जनगणना की शुरुआत।

Translate post

Akhilesh Yadav @yadav... · 04 Jun
आज 4 जून का वो ऐतिहासिक दिन है, जिसने एक साल पहले देश की राजनीति में, उप्र में पीडीए की एकजुटता का वो परिणाम देखा था जिसने साम्प्रदायिक राजनीति की नकारात्मकता को हराकर; उप्र में सकारात्मक, सौहार्दपूर्ण और जन संवेदना से जुड़ी उस राजनीति का नया दौर शुरू किया था, जो देश के भविष्य के निर्माण में मील का पत्थर साबित हो रही है।

पीड़ित, दुखी, अपमानित हर पिछड़ा, दलित व अल्पसंख्यक और आधी आबादी के रूप में प्रताड़ित महिला, उत्पीड़ित आदिवासी, ग़रीब, किसान, मज़दूर, कारोबारी, नौकरीपेशा, बेरोज़गार युवा और हर एक वर्ग का हर पीड़ित पीडीए से लगातार जुड़ रहा है और एक बड़े 'पीडीए परिवार' का निर्माण कर रहा है।

पीडीए ही भविष्य है!

जो पीड़ित वो पीडीए!

Akhilesh Yadav @yadavakhilesh
अहमदाबाद की बेहद दर्दनाक दुर्घटना में जीवन गंवाने वाले हर एक को श्रद्धांजलि!

दुख की इस घड़ी में हम सब, हर एक शोकाकुल परिवार-परिजनों के साथ हैं।

आगामी 3 दिनों तक सपा के सभी समारोह स्थगित रहेंगे।

Akhilesh Yadav @yadavakhilesh
इधर-उधर की राजनीति छोड़कर अपने मंत्रालय पर ध्यान दें।

और कुछ नहीं कहना, समाचार ख़ुद ही सब कह रहा है।

Translate post

Akhilesh Yadav @yadavakhil... · 2d
ये है कच्चा चिट्ठा, भाजपा राज में :
- 'नारी-वंदना'
- 'ईज़ ऑफ़ डूइंग बिजनेस'
- 'आत्मनिर्भरता'
- 'जन रक्षक पुलिस'
- 'भाजपाई अमृतकाल'
जैसी भाजपाइयों की बड़ी-बड़ी लुभावनी बातों का।

लखनऊ उप्र की राजधानी है और ये घटना वहीं की है। जब मुखिया जी के दीये के तले अंधेरा होगा तो बाक़ी प्रदेश भाजपा राज में अंधेर नगरी ही कहलाएगा।पुलिस को किसी के भी साथ अभद्रता करने की छूट नहीं होती है, इसीलिए ऐसा दुर्व्यवहार और दुस्साहस तब तक संभव नहीं है जब तक पुलिस को सत्ता की मूक अनुमति न मिली हो।

तुरंत कार्रवाई की अपेक्षा है।

निंदनीय!

Akhilesh Yadav @yadav... · 05 Jun
ये है भाजपाई भ्रष्टाचार का 'जल से छल' का मासिक ब्यौरा।

- अप्रैल में लखीमपुर में टंकी फटी,
- मई में सीतापुर में टंकी फटी,
- जून में जालौन में टंकी फटी।

जुलाई का समाचार मिलते ही अपडेट किया जाएगा।

और कुछ नहीं कहना है!

Akhilesh Yadav @yadavakhilesh
पक्षपाती प्रशासन पीडीए को प्रताड़ित न करे। यही है पीडीए की संयुक्त मांग।

कौशांबी में न्याय हो!

Translate post

Akhilesh Yadav @yadav... · 05 Jun
जिसने किया भावी शिक्षकों का बुरा हाल
न रहेगी वो सरकार, बहुत हुआ अत्याचार

जब तक विज्ञापन नहीं, तब तक समापन नहीं!

#97000
#97000_प्राथमिक_शिक्षक_भर्ती
#डीएलएड
#डीएलएड_शिक्षक_भर्ती

Akhilesh Yadav @yadavakhil... · 2d
उप्र शिक्षा सेवा चयन आयोग ने पीजीटी की परीक्षा को तीसरी बार स्थगित करने की विज्ञप्ति आज प्रकाशित की है।

नाम बदलनेवाली सरकार को 'उप्र शिक्षा सेवा चयन आयोग' का नाम बदलकर 'उप्र शिक्षा सेवा स्थगन आयोग' कर देना चाहिए।

इससे अभ्यर्थियों में जो आक्रोश है वो जायज़ है। एक सौ एक बार हम Show more

Following

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

जो ‘पेड़’ हमारे अपनों ने ख़ुद लगाये होते हैं
वो बड़े बुज़ुर्गों के आशीर्वाद सा साया देते हैं

विश्व पर्यावरण दिवस की हरी-भरी शुभकामनाएँ!

Translate post

Akhilesh Yadav @yadav... · 02 Jun

हम समस्त शिक्षक वर्ग और उनके परिवारों के साथ हैं:
- जिन सम्माननीय सेवानिवृत्त शिक्षकों का वाचिक-अभद्रता द्वारा अपमान किया गया, उनके साथ भी
- जिन्हें वेतन के नाम पर चंद पैसे मिल रहे हैं उनके साथ भी और
- जो भाजपा सरकार आने के बाद से सालों साल से शिक्षक बनने का कभी न ख़त्म होने वाला इंतज़ार कर रहे हैं, उनके साथ भी।

शिक्षा जगत कहे आज का, नहीं चाहिए भाजपा!

Akhilesh Yadav @yadavakhil... · 4d

उप्र में प्रशासनिक नाकामयाबी की वजह से लोगों की जान जा रही है। कौशांबी में राजनीतिक रसूख़ रखनेवालों के द्वारा लगाये गये झूठे मुकदमे ने किसी को आत्महत्या करने पर मजबूर कर दिया और उसके बाद पुलिस की लीपा-पोती जैसी निंदनीय कार्रवाई ने शासन-प्रशासन के बीच की मिलीभगत और साँठगाँठ का काला चिट्ठा सबके सामने ला दिया।

ऐसे ही झूठे मुकदमों से कभी रामपुर में किसी को प्रताड़ित किया गया, कभी अमेठी में, तो अभी हाल में प्रतापगढ़ और हरदोई में। उप्र का ऐसा कोई भी जनपद नहीं होगा जहाँ राजनीतिक विरोधियों को ऐसे बदनीयत झूठे मुकदमों में न फँसाया गया है।

न्याय हो!

Akhilesh Yadav @yadavakhil... · 6d

भ्रष्टाचारी भाजपा का निर्माण, भाजपा की तरह ही है : ऊपर से चमचम, अंदर से बेदम!

सच्चाई तो ये है कि भाजपा सरकार में पुलिस, तहसील और निर्माण कार्यों के बीच ‘करप्शन का कम्पटीशन’ चल रहा है। सरकार के गुप्त उद्देश्यों की पूर्ति के लिए जगह-जगह ऐसे अधिकारी चुन-चुनकर भेजे जा रहे हैं जो Show more

Akhilesh Yadav @yadavakhil... · 2d

वयोवृद्ध और वरिष्ठ नेता श्री महेंद्र राजभर जी पर हुआ हिंसक हमला भाजपा के राज में ‘पीडीए समाज’ पर लगातार बढ़ते जा रहे अपमानजनक व्यवहार और अत्याचार का एक और निंदनीय उदाहरण है।

भाजपा अगर सोचती है कि वो किसी समाज को अंदर से तोड़कर अपनी विभाजनकारी राजनीति को बनाए रखेगी तो ये उसकी ग़लतफ़हमी है। अगर इस हमले में भाजपा की नज़रअंदाज़ी शामिल नहीं है तो इस हमलावर को तत्काल गिरफ़्तार करके, उसके किये की सज़ा दी जाए।

हिंसा हताशा का ही एक रूप होता है। भाजपा याद रखे ऐसे कृत्यों से पीडीए का मनोबल टूटेगा नही बल्कि और भी शक्तिशाली होगा।

जय संविधान, जय पीडीए!

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

ईद-उल-अज़हा की दिली मुबारकबाद।

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

15 जून को श्रेय लेने की भाजपाई युक्ति
किसीकी नियुक्ति तो किसीकी विमुक्ति

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

खेती-किसानी के लिए जो लोग हवाई सर्वे कर रहे हैं दरअसल उनके पास समय की कमी नहीं है बल्कि उस ‘साहस’ की कमी है जो ज़मीन पर किसानों के रोष-आक्रोश का साक्षात सामना कर सके।

किसान पूछ रहे हैं, इतनी ऊँचाई से नीचे छुट्टा पशु दिखाई देते हैं क्या?

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

प्रिया सरोज-रिंकू सिंह को सगाई की स्नेहिल बधाई एवं शुभकामनाएँ!

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

प्रसिद्ध समाजसेवी एवं शिक्षाविद् श्रीमती कांति सिंह जी की जीवनी ‘छूना है आसमान’ के विमोचन के अवसर पर आज लखनऊ में। दरअसल वही बायोग्राफ़ी सार्थक होती है जो ‘पुस्तक’ से शुरू हो और अंत तक आते-आते पाठक के लिए ‘प्रेरणा’ बन जाए, अपेक्षा के इन मानकों पर ये जीवनी खरी उतरी है। जीवनी लेखिका एवं प्रकाशन से संबद्ध सभी को हार्दिक बधाई और शुभकामनाएँ!

Translate post

Akhilesh Yadav @yadavakhil... · 3d

संपूर्ण देश में वीरता के लिए विख्यात, चक्रवर्ती सम्राट महाराजा सुहेलदेव जी के विजय दिवस की इस संकल्प के साथ, हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं कि हम भविष्य में उप्र की सरकार की तरफ़ से लखनऊ के गोमती रिवर फ्रंट पर उनकी देदीप्यमान स्वर्णिम आभा प्रतिमा का निर्माण और एक भव्य समारोह में, उस प्रतिमा का सर्व दर्शनार्थ सादर लोकार्पण करेंगे।

पंजीकृत डाक पंजीकरण संख्या GPO/LW/NP-300/2024-2026 कुल पृष्ठ : 48 डिस्पैच तिथि : 15, 16, 17

समाजवादी पार्टी

/samajwadiparty
www.samajwadiparty.in

QR कोड स्कैन करें और
वाट्स-एप चैनल से जुड़ें

/Akhilesh Yadav

/Samajwadi Party

मोर्चे का गीत

रोशनी और फ़ौलाद का मोर्चा
हम बनाएँगे जनवाद का मोर्चा

जिनकी बस्ती लुटी जिनकी ख़ुशियाँ लुटीं
उनकी ताक़त की ईजाद का मोर्चा

हम किसानों व मज़दूरों का मोर्चा
उगते सूरज का और चाँद का मोर्चा

कर्म से ज्ञान का, ज्ञान से मुक्ति का
मुक्ति से सबके संवाद का मोर्चा

सब लुटेरों, सभी ज़ालिमों के ख़िलाफ़
युद्ध के शंख के नाद का मोर्चा

एक दुनिया नई जो है गढ़ने चले
ऐसे सपनों की बुनियाद का मोर्चा

हम बनाएँगे जनवाद का मोर्चा
रोशनी और फ़ौलाद का मोर्चा।।

-गोरख पाण्डेय
(साभार: कविता कोश)